॥ वीतरागाय नमः ॥

श्री जिन दत्तसूरि ग्रन्थमाला ग्रन्थाङ्क ३

श्री जिन रत्न सूरि पाद पद्मेभ्यो नमः

भावि विज्ञान व नवरत्न विधान

अनुवादक व सम्पादक

जैन यति रामपाल

प्रकाशक

जिन दत्तसूरि ग्रन्थमाला देहली

वीर स० २४५८

प्रथमवार ५००

विक्रम सं० १९९२

मूल्य ।≈)

सहायकों की शुभ नामावली

ला० नवलकिशोर जी खैराती लालजी राक्यान देहली

सेठ जी खेमचंदजी की धर्मपत्नी धन्नोबीबी झूंझनूं

ला० बाबूमलजी गोटे वाले देहली

ला० कपूरचंदजी बोहरा देहली

ला० अमीचंदजी राक्यान देहली

प्रथम ग्राहकों की शुभ नामावली

ला० हजारी लालजी उमराव सिंहजी डूंगरिया देहली प्रति ११

ला० पन्नालालजी नभेडिया देहली प्रति ११

ला० सुमति दासजी शीतल प्रसादजी देहली

राक्यान प्रतियाँ २५

प्रस्तावना

मुझे गत महावीर जयन्ती के अवसर पर जैन यति श्रीमान् रामपाल जी से मेरे मित्र भाई शीतलदास जो राकियान की कृपासे मिलने का अवसर मिला, परन्तु मुझको उस समय यह कल्पना भी न थी कि हमारे बीच में घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित हो सकेगा और एक समय आया कि यतिजी ने मुझको अपनी इस पुस्तक को प्रस्तावना लिखने को कहा। कुछ समय तक तो मेरो इच्छा लिखने की न हुई किन्तु यतिजी की इच्छा ही न थी किन्तु मेरे जैसे तुच्छ व्यक्ति के लिये तो आदेश ही था।

इस पुस्तक में जिन जिन विषयों पर प्रकाश डाला है उन सबका रोज़ाना जीवन से बहुत सम्बन्ध है। वैसे इन विषयों के सम्बन्ध में मेरा ज्ञान बहुत अल्प तथा नहीं के बराबर सा हो है। और जो कुछ परिचय है भी वह मेरे पूज्यपाद मामा श्रीमान् ला० पन्नालालजी की असोम कृपा से हुआ है। इससे पूर्व इन सब विषयों

पर मेरा बिल्कुल विश्वास न था किन्तु जब कई बातें मेरे अनुभव में आईं तो मेरा यह विश्वास होगया कि ये वस्तुऐं तो बड़ी आवश्यक और उपयोगी हैं। आजकल अश्रद्धा पैदा होने का कारण यह है कि इन विषयों पर ठीक ठीक विचार कर जानने वाले तथा बताने वाले बहुत थोड़े व्यक्ति हैं और यह ही कारण है कि इन विषयों का ज्ञान दिनोंदिन घट रहा है। जिस समय जैनागमों तथा अन्य प्राचीन ग्रन्थों में प्रवेश करते है तो इनकी उपयोगिता सामने आने लगती है। इन्हीं सब विचारों को सामने रखते हुए यतिजी ने यह पुस्तक लिखी है।

यतिजी को पिछले तीन मास से कई ऐसे ज़रूरी कामों में लगे होते हुए भी मेरे निवेदन करने पर नवरत्नों का संक्षिप्त विवरण भी दिया है।

मेरा विश्वास है कि यह छोटी सी पुस्तक सर्व साधारण के लिये बहुत उपयोगी और सुगमता से इन विषयों का ज्ञान प्राप्त करने के लिये पर्याप्त सिद्ध होगी।

मुझको यतिजी ने प्रेमपूर्वक अपने संग्रह की प्रस्तावना लिखने का अवसर प्रदान कर मुझे बहुत ऋणी किया है। यह मैं कभी नहीं भूल सकता हूँ। अन्त में मेरी शासनदेव से प्रार्थना है कि यति जी का यह प्रयत्न सफल हो और हमारे बीच मे जो धर्म स्नेह स्थापित हुआ है वह अधिकाधिक वृद्धिगत हो। इस दृढ़ संकल्प के साथ अपना वक्तव्य समाप्त करता हूं।

मालीवाड़ा, देहली।
आषाढ़ शुक्ला द्वितीया
सं० १९९२

—गुलाबचन्द लोढा

॥ श्री ॥

वक्तव्य

जैन शास्त्रों में अंग स्फुरन, स्वप्न ज्ञान, गृह निर्माण और स्वरोदय ज्ञान, नवरत्न विधान चौदह पूर्व से अलग नहीं है, किन्तु पूर्वों का ज्ञान प्राचीन समय में जो था वह इस समय नहीं रहा तथापि जैन शास्त्रों में समय के माफ़िक बहुत कुछ मौजूद है प्राकृत पाठ ऐसे २ हैं कि बड़े २ धुरन्धर विद्वान् भी समझ नहीं सकते तो मेरी तो हस्ती ही क्या है कि मैं समझ सकूं व लिख सकूं, तथापि गुरुदेव महाराज की कृपा से जो कुछ भी लिखने बैठा हूँ वह सब उन्हीं का प्रशाद है।

अंग स्फुरन में अंग फड़कने पर क्या २ फल देने वाला होता है इसका वर्णन है। स्वप्न ज्ञान निद्रा में जो स्वप्न आते हैं उनके शुभाशुभ फल का वर्णन है।

गृह निर्माण में घर किस मास व संक्रान्ति में व वास्तु पुरुष पहिचान खात खोदना आदि लाभालाभ का वर्णन है।

स्वरोदय ज्ञान में तत्वों की पहिचान, स्वरों की पहिचान, नाम और गुण जानने की रीति, हानि, लाभ के प्रश्नों का उत्तर स्वयं जानने आदि का वर्णन है। नवरत्न विधान में नवग्रह के रत्नों की पहिचान व शुभाशुभ फल का वर्णन है।

मेरे विज्ञ पाठक यदि इस छोटी सी पुस्तक को पसन्द करेंगे तो आगे बढ़ने का साहस करूंगा। कुछ त्रुटि इत्यादि पाठकों को मालूम दे तो अवश्य सूचित करें ताकि आगे भूल निकालने की कोशिश करूं।

इस पुस्तक में जो कुछ सहायता पूर्वाचार्यों के ग्रन्थों से तो हुई ही है किन्तु लाभचन्दजी श्रीमाल चिड़ावा निवासी से जो प्राचीन ग्रन्थ मिले हैं तथा नवग्रहों के नवरत्नों की सामग्री जुटाकर लिखने में भाई गुलाबचन्दजी लोढा देहली निवासी ने सहायता पहुँचाई है एतदर्थ धन्यवाद।

ठि० पौसाल रंग सूरि
कटरा खुशालराय, देहली।
आषाढ़ शुक्ला २ सं० १९९२

—जैन यति रामपाल

॥ कुशल सूरि गुरु पाद पद्मेभ्यो नमः ॥

समर्पण

अनेक गुण विभूषित परम गुरुदेव जं० यु० प्र० सू० भट्टारक श्रीपूज्य श्री १००८ श्रीजिन रत्न सूरीश्वर जी महाराज की पवित्र सेवामें

पूज्यवर्य प्रभो आप श्रीने मुझ जैसे सेवक पर अमूल्य उपकार किये हैं। उस ऋण से मैं अलग नहीं होसकता गुरुदेव! मैं चाहे जैसा भी हूँ और चाहे जिस देश में रहकर अपने कर्त्तव्य कार्यों में प्रवृत्ति करता रहूँ—परन्तु आप श्री के मुझपर किये हुये उपकारों का चित्र सदैव मेरे सन्मुख रहता है।

गुरुवर्य्य! इस पुस्तक के छपते हुये ही आपका देवलोक होगया किन्तु आप श्री के अनेकानेक उपकार मुझपर हुये है उन गुणों से मुग्ध हो कर मैं अपनी यह छोटीसी शुभ प्रयत्न जन्य भावि विज्ञान का अनुवाद व संग्रह आपके कर कमलों मे समर्पित करता हूं।

आपाढ शुक्ला २
सम्वत् १९९२

आपका शिष्य—
जैन यति रामपाल

श्रीमद् रत्नसूरि रत्न पाद पद्मेभ्यो नमः ।

मङ्गलाचरण

नमामि जिन नेतारं नित्यं भक्तोत्सव प्रियम् ॥
स्वर्गापवर्ग दातारं ज्ञानदं च पदे पदे ॥ १ ॥
प्रकृति शान्ति रूपाय अहिंसा भूषणाय च ॥
सुधर्मज्ञ सुखदाय जैन पथे नमो नमः ॥ २ ॥
नमस्कृत्यारि हंतारं वीरं वीरं जिनेश्वरम् ॥
वर्द्धमानं विनोदाय भावी फलं कथयाम्यहम् ॥३॥
श्रीरत्नसूरि पूज्योऽहं आत्मिक ज्ञान याचकः ॥
रत्नचन्द्रस्य दासोस्मि जिनधर्मोत्सव प्रियः ॥४॥

(१) अङ्ग स्फुरण निमित्त

(१) दाहिने भाग का मस्तक स्फुरित हो राजा से सन्मान पारितोपिक मिले, चिन्ता दूर हो और सम्पत्ति मिले, यदि वाम भाग का स्फुरित हो तो वहुत कम लाभ हो ।

(२) मस्तक का पिछला भाग स्फुरित हो तो परदेश में धन मिले ।

(३) दाहिना कर्ण स्फुरित हो तो अपनी कीर्त्ति सुनने में आवे यदि वाम कर्ण स्फुरित हो तो अपकीर्त्ति प्रसिद्धि में आवे ।

(४) कपाल का स्फुरण हो तो राजा सन्मान से बुलावे या हुकूमत की प्राप्त हो ।

(५) दाहिना कपोल स्फुरण हो तो सुन्दर स्त्री से मिलाप हो यदि बामा स्फुरण हो तो कलह हो।

(६) दाहिनी भ्रू स्फुरण हो आनन्द की बात पैदा हो यदि वाम भ्रू स्फुरण हो तो मित्रों से कलह हो ।

(७) दोनों भ्रुवों के बीच स्फुरित हो तो प्रिय सज्जन का मिलाप हो ।

(८) दाहिनी चक्षु ऊपर से स्फुरित हो तो इरादा पूर्ण

हो वाम चक्षु ऊपर से या नीचे से स्फुरित हो तो चिन्ता उत्पन्न हो।

(९) ओष्ठ (होठ) के ऊपर का भाग स्फुरित हो तो कलह हो नीचे का भाग स्फुरित हो तो सुन्दर स्त्री से मिलाप हो।

(१०) डाढी फुरके तो मुकद्दमे मे हार हो।

(११) दाहिनी गर्दन स्फुरित हो तो लक्ष्मी प्राप्त हो, यदि वामी फुरके तो रंज (गम) पैदा हो।

(१२) दाहिनी छाती स्फुरित हो तो शत्रु को पराजय करें यदि वामी स्फुरित हो तो चिन्ता हो।

(१३) दाहिना स्कंध (कंधा) स्फुरित हो तो भाई से मिलाप हो यदि वाम स्फुरित हो तो चिन्ता हो।

(१४) दाहिना हाथ स्फुरित हो तो मुकद्दमे में जय हो यदि वाम स्फुरित हो तो पीड़ा हो।

(१५) दाहिनी पसली स्फुरित हो तो प्रसन्नता हो यदि वाम पसली स्फुरित हो तो रंज हो।

(१६) उदर (पेट) स्फुरित हो तो चिन्ता दूर हो।

(१७) नाभि स्फुरित हो तो अपने पद से हटाया जाय।

(१८) गुदा स्फुरित हो तो अपने शत्रु की हार हो।

(१९) दाहिने हाथ की हथेली स्फुरित हो तो लक्ष्मी मिले यदि वामी हथेली स्फुरित हो तो लक्ष्मी का नाश हो।

(२०) पुरुष चिन्ह स्फुरित हो तो स्त्री से मिलाप हो।
(२१) स्त्री का दाहिना स्तन स्फुरित हो तो भर्त्तार से वियोग हो यदि वाम स्फुरित हो तो मिलाप हो।

नोट—जो फल पुरुष के लिये दाहिने अंग का स्फुरित होना लिखा वही स्त्री के वाम अंग का जानना चाहिये। याने स्त्री के लिये वामा अंग स्फुरित होना अच्छा और पुरुष का दाहिना अंग प्रधान समझना चाहिये

(२) दूसरा स्वप्न निमित्त

(१) अनुभूत की हुई वस्तु का स्वप्न आता है उसको झूंठा समझना चाहिये याने कुछ फल देने वाला न होगा।
(२) सुनी हुई बात का स्वप्न आता है उसको भी असत्य समझना चाहिये।
(३) देखी हुई वस्तु का स्वप्न भी असत्य है।
(४) चिन्ता फिक्र से जो स्वप्न आवे वह भी झूठा है
(५) प्रकृति विकार से स्वप्न आता है जैसे पित्त प्रकृति वाला मनुष्य पानी, फूल, अनाज, भोजन जवाहिरात, मूंग और लाल पीली वस्तु का देखना सम्पूर्ण रात्रि सैंकड़ों बाग़ बग़ीचे का देखना किन्तु यह सब स्वप्न मिथ्या समझना चाहिये।

(६) वादी की प्रकृति वाला मनुष्य स्वप्न में पर्वत पर चढ़ता है वृक्ष पर जा बैठता है, मकान पर जा कर लुढक जाता है, कूदना, फांदना, सवारी पे सवार हो के बाहर जाना, आकाश में उड़ना, वगैरह विशेष करके दिखलाई देते हैं किन्तु यह सब निरर्थक समझना चाहिये ।

(७) स्वप्न वह सत्य है जो धर्म और कर्म के प्रभाव से आया हो चाहे भला या बुरा हो उसका फल अवश्य होगा ।

(८) रात्री के पहले प्रहर में देखा हुआ स्वप्न बारह मास में फल देता है, दूसरे प्रहर में देखा हुआ नव मास में, तीसरे प्रहर मे देखा हुआ छह मास में और चतुर्थ प्रहर में देखा हुआ तीन मास में, दो घड़ी रात्री के रहते हुये या सवेरे सूर्योदय होते समय देखा हुआ स्वप्न शीघ्र ही फल देने वाला होता है, दिन में सोते हुये को स्वप्न आवे तो निष्फल होता है ।

(९) अच्छा स्वप्न देखा और निद्रा खुलगई हो तो फिर सोना नहीं चाहिये—धर्म ध्यान करते हुये जागते हुये रहना चाहिये—याने फिर कोई खराब स्वप्न आकर पहले का फल नष्ट न करदे ।

(१०) बुरा स्वप्न देख कर जाग गये और रात बाकी रहे तो सो जाना ही ठीक है ।

(११) पहले अच्छा स्वप्न देखा और पीछे बुरा देखा तो अच्छे का फल नष्ट हो जावेगा बुरा फल मिलता है क्यों कि वह पीछे आया है ।

(१२) पहले बुरा देखा और पीछे से अच्छा देखा तो पिछला ही फलीभूत होगा याने अच्छा फल होगा क्यों कि पिछला स्वप्न पहले स्वप्न के फल को नष्ट कर देता है ।

(१३) अच्छा या बुरा जैसा स्वप्न आया जिन प्रतिमा के सम्मुख जाकर कहदे, मार्ग में किसी से कुछ मत बोलो-देव गुरु के सामने खाली हाथ नहीं जाना चाहिये-फल या नैवेद्य प्रतिमाजी के सामने रखके स्वप्न कहना चाहिये पश्चात् निर्ग्रन्थ मुनि नगर मे उपस्थित हों तो उनके सामने भी विनय के साथ जाकर कहना-जो कुछ वे आज्ञा दें उस पर गौर करना चाहिये। मिथ्यावादियों के सामने जाकर स्वप्न कहना लाभ के बजाय हानि को लेना है ।

(१४) जो हाथी पर चढ़ कर समुद्र में प्रवेश स्वप्न में करे तो कुछ दिनों में वह मनुष्य राजा बने ।

(१५) श्वेत हाथी पर सवार होकर नदी किनारे चाँवलों का भोजन करे तो कुछ दिन में राजा हो।

(१६) समुद्र को स्वप्न में हाथों से तैरकर पार होजाय वह कुछ दिनों में राज्य पदवी को प्राप्त हो।

(१७) तीर्थंकर को निर्ग्रंथ मुनि को और तीर्थ स्थान को देखना बहुत अच्छा है, आशा पूर्ण होगी, पहिले लिख चुके हैं कि देखी हुई वस्तु का स्वप्न आना निष्फल होता है किन्तु तीर्थंकर, मुनि की और तीर्थ भूमि का चिंतन करना भी अच्छा है यदि स्वप्न आवे तो अवश्यमेव लाभ दायक होगा।

(१८) हाथी, बैल, सिंह, लक्ष्मी देवी फूलों की माला, चन्द्र, सूर्य, ध्वज, कलश, पद्मसरोवर, समुद्र, देव विमान, रत्न राशी और निर्धूम अग्नि यह चौदह स्वप्न तीर्थंकर की माता जब तीर्थंकर का जीव गर्भ में आता है तब देखती है। बड़े भाग्य वाला जीव गर्भ में आवे तब ऐसे उत्तम स्वप्न देखता है चक्रवर्त्ति का जीव जब गर्भ में आता है तब माता ये ही चौदह स्वप्न देखती है। किन्तु स्वच्छ नहीं वासुदेव का जीव जब गर्भ में आवे तब वासुदेव की माता इन चौदह स्वप्नों में से सात स्वप्न

देखे। बलदेव का जीव जब गर्भ में आवे तब चार स्वप्न देखे, मंडलीक का जीव जब गर्भ में आवे तब माता इन स्वप्नों में से एक स्वप्न देखे।

(१९) स्वप्न में जिसको वीणा पारितोषिक में मिले उसका सुन्दर स्त्री से मिलना होगा।

(२०) ध्वज—पताका—छड़ी जिसको इनाम में मिले उसको कुछ दिन में सम्पत्ति मिलेगी।

(२१) स्वप्न में जिसको रक्त वर्ण का मूत्र व रक्त वर्ण की ही टट्टी (दस्त) लगे तो दिवाला निकल जाय।

(२२) मिट्टी के हाथी पर सवार होकर जो समुद्र में प्रवेश करे तो कुछ दिन में राजा या श्रीमन्त बने।

(२३) स्वप्न में जिसकी गोद फूलों से भर जाय तो सम्पत्ति मिलेगी।

(२४) पुरुष यदि स्वप्न में स्त्री बन जाय या स्त्री पुरुष बन जाय तो निश्चय पूर्वक लाभ होगा व कुटुम्ब की वृद्धि होगी।

(२५) जिस मनुष्य का स्वप्न मे दाहिने हाथ को श्वेत रंग का सर्प डसे तो सम्पत्ति कुछ दिन में मिले

(२६) जिस मनुष्य के स्वप्न मे हाथ, पैर, मुख, कर्ण या नासिका लंबे होजॉय तो उसकी कीर्त्ति बढ़ेगी

(२७) जिस मनुष्य को स्वप्न में हाथी, घोड़ा, रथ, आसन, गाड़ी या वस्त्र चोरी जाँय तो मान भंग होगा अपयश बढ़ेगा।

(२८) जिस मनुष्य को स्वप्न में सिंह, हाथी, घोड़े या जंगली सिंह आदि रथ में जुते हुये हैं उस रथ पे सवार होकर पर्यटन (सफ़र) करे तो कुछ दिन में राजा बने।

(२९) जिस मनुष्य को स्वप्न मे लिङ्ग व स्त्री के योनि छेदन होजाय तो विषयजन्य सुख मिले।

(३०) ग्राम, शहर, पहाड़ या मकान अग्निसे जल रहा है और उसपर आप खड़े हैं तो आपको अवश्यमेव कुछ दिनों में खुशी होगी।

(३१) स्वप्न मे जिसके नख और केश लम्बे बढ जाँय तो कई प्रकार का लाभ होवे।

(३२) जिस मनुष्य को स्वप्न मे सोना, चाँदी, जवाहिरात या हथियार आदि चोरी जाँय तो कीर्त्ति में धक्का लगे।

(३३) स्वप्न मे नदी, सरोवर, कुंड या समुद्र पानी से भरा हुआ देखे तो बहुत धन मिले।

(३४) स्वप्न में कै होना बुरे दिन की निशानी है।

(३५) स्वप्न में गाना गावे उसे रोना पड़े।
(३६) स्वप्न में नाटक करे तो बुरे दिन भोगे।
(३७) स्वप्न में वस्त्राभूषण, कपड़ा, मकान, सवारी या आसन जिसको इनाम में मिले उसकी इच्छा पूर्ण हो।
(३८) स्वप्न में जिसके श्वेत मल मूत्र आवे तो कीर्त्ति बढ़े।
(३९) सजे हुए मकान और शृंगार हाथी घोड़े देखना अच्छे दिन की निशानी है।
(४०) स्वप्न में सर्प या बिच्छू देखे और डरे नहीं तो धन मिले।
(४१) काले कपड़े पहने हुई काले रंग की स्त्री स्वप्न में जिसको दक्षिण दिशा की तरफ घसोट लेजाय तो मृत्यु निकट समझनी चाहिये।
(४२) स्वप्न में जिसके मस्तक पे खजूर का वृक्ष उगे तो कुछ दिन में मृत्यु समझे।
(४३) काले कपड़े धारण कर काले घोड़े पे सवार हो कर दक्षिण दिशा में जो मनुष्य जाय तो उसे बुरे दिन निकट में समझना चाहिये।
(४४) स्वप्न में शाल्मली-या केले के वृक्ष पर चढ़ जाय तो उसे धन मिले।

(४५) स्वप्न में जो मनुष्य गरम पानी पी जाय तो उसे अजीर्ण का रोग पैदा हो ।

(४६) स्वप्न में काले रंग की जितनी वस्तु देखी जांय वह बुरी हैं किन्तु हाथी, घोड़ा, गौ और देवी देवता यदि काले रंग के देखे जावें तो बुरे नहीं हैं ।

(४७) श्वेत (सफेद) रंग की वस्तु देखी जावे तो अच्छी किन्तु कपास और नमक अच्छा नहीं ।

(४८) स्वप्न में जिसकी जिह्वा (जीभ) हथियार से काट दी जावे तो फल अच्छा होगा ।

(४९) सूर्य चन्द्र जो मनुष्य हाथों में स्पर्श करे तो उसे हुक्म ओहदा मिले ।

(५०) स्वप्न में सूअर, भैंसे, गधे या ऊंट जुते हुये रथ पे सवार होके यदि दक्षिण दिशा को जाय तो शीघ्र मरे ।

(५१) स्वप्न में स्मशान के लकड़े पे सूके वृक्ष या धनुष पे जो मनुष्य चढ़ बैठे उसकी निकट मृत्यु समझना चाहिये ।

(५२) स्वप्न में जिसकी स्त्री को चोर चुरा ले जाय तो समझना चाहिये कि किसी प्रकार की हानि होगी ।

(५३) स्वप्न में जिसका पलंग या जूता चुराया जाय तो उसकी स्त्री शीघ्र मृत्यु को प्राप्त हो ।

(५४) स्वप्न में जो पुरुष अपने घर के द्वार की सांकल टूटी हुई देखे तो स्त्री की शीघ्र मृत्यु हो ।

(५५) स्वप्न में जिस मनुष्य को वादाम पिस्ता वगैरह मेवा इनाम में मिले तो बीमारी से आराम हो, खुशी पैदा हो ।

(५६) स्वप्न में जिसको अंगूठी मिले तो स्त्री से लाभ हो ।

(५७) स्वप्न में अंगूठी बेच दे तो स्त्री से कलह हो ।

(५८) स्वप्न में सेलडी सांठा या रस देखना अच्छा है खुशी पैदा होगी ।

(५९) स्वप्न में आकाश में उड़े तो बड़ा ओहदा मिले ।

(६०) सितारे चमकते दिखाई दें तो राजा प्रसन्न हो ।

(६१) स्वप्न में रोवे तो खुशी पैदा हो हंसे तो रोना पड़े ।

(६२) अगर पुरुष स्वप्न में स्त्री का आलिंगन किया देखे तो स्त्री से लाभ हो, स्त्री अगर पुरुष से आलिंगन किया देखे तो पुरुष से लाभ हो ।

(६३) स्वप्न में मयूर देखे तो राजा से मिलाप हो ।

(६४) स्वप्न में मिश्री का ढेर (ढिगला) दिखाई दे तो

आनन्द के समाचार प्राप्त होंगे ।

(६५) स्वप्न में कुत्ते का भोंकना देखे तो रंज पैदा हो ।

(६६) स्वप्न में अश्व [घोड़े] पर सवार होके चले तो इरादा पूर्ण हो ।

(६७) स्वप्न में गैंद का खेलना देखे तो कुछ दिनों में सम्पत्ति मिले ।

(६८) स्वप्न में मोतियों के भरे थाल दूसरों को बांट दे तो दूसरों को विद्या पढ़ावेगा उपदेश से धर्म का उद्योत करेगा ।

(६९) स्वप्न में नृत्य देखे तो आनन्द प्राप्त हो ।

(७०) स्वप्न मे अपने हाथों से समुद्र को तैर गया देखे तो उसी भव से उसका मोक्ष हो जाय किन्तु इस काल में मोक्ष होना रहा नहीं इसलिये देवलोक समझो ।

(७१) स्वप्न में अपने आपको मर गया देखे तो बुरा है कष्ट होगा ।

(७२) स्वप्न मे अपने आपको भिष्टा से भरा हुआ देखे तो बहुत लाभ हो ।

(७३) स्वप्न मे छत्र मिले तो राज्य से लाभ हो ।

(७४) स्वप्न में जिस मनुष्य की हथेली पर केश उगे तो कर्ज लेना पड़े ।

(७५) बीमार मनुष्य स्वप्न में चन्द्र सूर्य देखे तो शीघ्र आराम पावे ।

(७६) स्वप्न में दूध, दही, या घी दिखलाई दे तो अच्छा है दूध के साथ घी मिला कर पीना अच्छे दिनों की निशानी है ।

(७७) स्वप्न में अपने पर बिजली गिरे तो कैद हो ।

(७८) स्वप्न में दांत जिसके सोने के हो जांय तो आराम मिले ।

(७९) स्वप्न में जिसके पेट पर वृक्ष उगे तो रोग हो ।

(८०) स्वप्न में जल से भरे हुए सरोवर में बैठ कर खीर का भोजन करे तो कुछ दिन में राजा बने ।

(८१) स्वप्न में सिंहनी, भैंस और गौ के आंचल से दूध पीवे तो हुकूमत मिले ।

(८२) स्वप्न में मक्खियां, या डांस मच्छर काटे तो कुछ दिन में साधु बनेगा ।

(८३) स्वप्न में काले पीले रंग का मनुष्य डरावनी सूरत बना के डरावे तो मृत्यु निकट समझो ।

(८४) स्वप्न में मस्तक तक कीचड़ में डूब जाय तो कुछ दिन में मृत्यु हो।

(८५) स्वप्न में वानर और गीदड़ दिखाई दे तो बुरा है कलह हो।

(८६) स्वप्न में तारे खिरना, उल्कापात या भूकम्प दिखलाई दे तो क्लेश पैदा हो।

(८७) स्वप्न में जिन प्रतिमा को हंसती, रोती, या खंडित देखे तो पीड़ा हो।

(८८) स्वप्न में हरा घास, चांवल और ताम्बूल दिखाई दे तो सम्पत्ति मिले।

(८९) स्वप्न में खिरनी के वृक्ष पर चढ़ जाय तो हर प्रकार से लाभ हो।

(९०) स्वप्न में वीणा लेकर जहाज पर चढ़े तो सुन्दर स्त्री से मिलाप हो।

(९१) स्वप्न में वीर्य पात होना अच्छा नहीं हानि होगी। यदि प्रकृति विकार से हो तो फल नहीं होता।

(९२) स्वप्न में अपने दिल प्रसन्न की वस्तु दिखाई दे तो अच्छा है इसके अतिरिक्त दिखलाई दे तो अच्छा नहीं।

(६३) स्वप्न में अपने कर्ण को, नाक को, जुबान को, और शरीर को प्रसन्न वस्तु का दिखाई देना अच्छा है।

(६४) स्वप्न में अपने मस्तक से रक्त की धारा गिरती दिखाई दे तो कुछ दिन में राजा बने ।

(६५) स्वप्न में आम के वृक्ष को फल लगे देखे तो हर प्रकार से लाभ हो ।

(६६) स्वप्न मे पका हुआ फल, छत्र, कन्या और ध्वजा देखे तो इच्छा पूर्ण हो।

(६७) स्वप्न में बिना धुंए की अग्नि देखना अच्छा है किन्तु धुंए सहित अग्नि या अकेला धुंआ देखना अच्छा नहीं।

(६८) स्वप्न में हजार पंखडी के कमल पर बैठकर खीरका भोजन करे तो कुछ दिनमें राजा बने ।

(६९) स्वप्न में आंखों पर अंजन लगाये तो रोग पैदा हो।

(१००) स्वप्न में अच्छे २ ग्राम नगर दिखलाई दें तो प्रसन्नता पैदा हो

(१०१) स्वप्न में पहाड़ों को उखेड़ दे तो कुछ दिनो में राजा बने

(१०२) स्वप्न में चूहा, बिडाल, गोह, और नेवला देखना अच्छा नहीं तकलीफ होगी ।

(१०३) स्वप्न में सोने चांदी के थाल में खीर का भोजन करे तो प्रसन्नता पैदा हो ।

(१०४) स्वप्न में अपने को कैद में देखे या रस्सों से अपने को बांधे तो अच्छा है लाभ होगा ।

इति श्री भावी विज्ञानस्यः द्वितीयो स्वप्न निमित्तः

(३) गृह निर्माण निमित्त

गृहस्थ के लिये प्रथम सीढी घर है जिस घर में निवास करना है वह ही यदि अशुभ फल देनेवाला हुआ तो मैं समझता हूं कि वह गृहस्थी कभी सुखी नहीं हो सकता । इस लिये घर- कौन २ से मास में बनाने से हानि होती है और कौन २ से में लाभ होता है स्पष्ट रूप से दिखलाते हैं ।

(१) श्रावण मास में घर बनावे तो चतुष्पद (पशु) बंधे याने धन प्राप्ति करे ।

(२) भाद्र मास में घर बनावे तो शून्य रहे उसमें कोई रह नहीं सकता निर्धन करदे ।

(३) आश्विन मास में घर बनावे तो सदा क्लेश (कलह) रहे ।

(४) कार्तिक मास में घर बनावे तो स्वामी का व सेवक का क्षय हो।

(५) मार्गशीर्ष मास में घर बनावे तो धन धान्य से बढ़े

(६) पोष मास में घर बनावे तो स्वामी सम्पत्ति से बढ़े

(७) माघ मास में घर बनावे तो अग्नि भय हो।

(८) फाल्गुन मास में घर बनावे तो लक्ष्मी बढ़े।

(९) चैत्र मास में घर बनावे तो शोक हो।

(१०) वैशाख मास में घर बनावे तो धन धान्य बढ़े।

(११) ज्येष्ठ मास में घर बनावे तो स्वामी की मृत्यु हो।

(१२) आषाढ मास में घर बनावे तो स्वामी का, हाथी, घोड़ा, बैल, गाय, चतुष्पद सम्पूर्ण कुटुम्ब का नाश हो श्री हरिभद्र जी सूरी महाराज का फर्माना है कि इस लोक में स्त्री, पुत्र, प्रपौत्र, भाग्य, सौभाग्य का उत्पन्न करने वाला परलोक में धर्म, अर्थ, काम का देने वाला वर्षा शीत, ताप, दुःख में हित का करने वाला घर होता है शुभ मास, पक्ष, दिवस, लग्न में मुहूर्त किया हो तो सम्पूर्ण सुखों को प्राप्त करता है। अशुभ मुहूर्त में व ग्रह में आरम्भ कराया हो या समाप्त कराया हो तो अनेक उपद्रवों का करने वाला होता है।

ब्रह्म भूमि, क्षत्रिय भूमि, वैश्य भूमि, और शूद्र भूमि चार प्रकार की भूमियें होतीं हैं, वर्ण श्वेत हो स्वाद मीठा घी के समान सुगन्धि आवे तो ब्रह्म भूमि कहे, रक्त वर्ण रक्त समान गन्ध आवे तो क्षत्रिय भूमि कहे, पीत वर्ण स्वाद खारी तेल समान गन्ध आवे तो वैश्य भूमि कहे, कृष्ण वर्ण स्वाद कटु मत्स्य (मच्छ) सम गंध आवे तो शूद्र भूमि कहनी चाहिये। ब्राह्मण को ब्रह्म भूमि, क्षत्रिय को क्षत्रिय भूमि, वैश्य को वैश्य भूमि, और शूद्र को शूद्र भूमि फल दायक होती है।

घर के आरम्भ में संक्रांति युक्त सूर्यमास विचार

तुल, वृश्चिक, मेष और वृष इन चार संक्रांतियों में उत्तर दिशा या दक्षिण दिशा को तरफ घर का द्वार करना मकर, कुम्भ, कर्क और सिंह इन चार संक्रांतियों में पूर्व या पश्चिम में द्वार करना, द्वि स्वभाव राशी व मिथुन कन्या, धन और मीन इन चार संक्रांतियों में घर का आरम्भ नहीं करना चाहिये।

नारचन्द्र की टिप्पणी में तो यह प्रमाण लिखा हुआ है कि मेष, धन, और सिंह इन तीन संक्रांतियों

में पूर्व दिशा के मुख वाला घर बनवाने से राजा का भय होता है, वृष, कन्या, मकर संक्राँतियों में दक्षिण दिशा के मुखवाला घर प्रारम्भ कराने से पुत्रादिक की मृत्यु होती है, मिथुन, तुला और कुम्भ संक्रांतियों में पश्चिमाभिमुख घर का द्वार बनाने से संताप वगैरह उत्पन्न करता है। कर्क, वृश्चिक और मीन संक्रांतियों में उत्तराभिमुख घर का द्वार कराने से कुल का क्षय होता है।

नींव खोदने का विचार

वास्तु पुरुष दाहिने अंग को दबाये हुये तथा दाहिनी करवट की तरफ सोये हुये नाग सम (आकार) के होता है, भाद्रपद, आश्विन और कार्तिक मास में वास्तु पुरुष का मस्तक पूर्व दिशा में होता है। दक्षिण में पीठ पश्चिम में पूंछ और उत्तर दिशा में कुक्षि (कूंख) होती है। मार्गशीर्ष पोष और माघ मास में दक्षिण दिशा में मस्तक पश्चिम में पीठ उत्तर में पूंछ और पूर्व दिशा में कुक्षि होती है। फाल्गुन, चैत्र, और वैशाख मास में पश्चिम दिशा में शिर उत्तर में पीठ पूर्व दिशा में पूंछ और दक्षिण में कुक्षि होती है। ज्येष्ठ, आषाढ़, और

श्रावण मास में उत्तर दिशा को तरफ शिर पूर्व दिशा में पीठ दक्षिण में पूंछ और पश्चिम में कुक्षि होती है, तात्पर्य यह है कि कुक्षि की तरफ से पहिले खोदना प्रारम्भ करना दूसरी दिशाओं में नहीं करना चाहिये।

दैवज्ञ वल्लभ में कहा है कि यदि प्रथम वास्तु पुरुष का शिर खोदे तो माता पिता का नाश हो। पीठ खोदे तो भय, रोग, और पीड़ा हो। पूंछ खोदे तो स्त्री, पुत्र, रत्न, अन्न, और धन का नाश हो। कुक्षि खोदे तो स्त्री, पुत्र, रत्न, अन्न और धन की प्राप्ति हो। वास्तु पुरुष का अंग तथा दिशा से खात वगैरह का नियम कहा अब विदिशा के लिये वास्तु शास्त्र में ऐसे कहा है।

वृषादिक तीन २ संक्रांतियें ईशानादिक कोने में विलोम (उलटा) होकर चलती है इसलिये शेषनाग का मुख त्याग करने योग्य है अर्थात् विलोम पने से शेषनाग तीन २ मास फिरता है इसीलिये उसका मुख तीन मास (वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़) तक ईशान कोन में रहता है, अग्नि कोन में तीन मास तक नाभि होती है, नैऋत्य कोन

में तीन मास तक पूंछ होती है, व वायव्य कोन रिक्त (खाली) रहता है, इसलिये वह कोन खाली खात वगैरह में श्रेष्ठ है। दूसरे तीन मास तक वायव्य कोन में मुख होता है, ईशान में नाभि अग्नि कोन में पूंछ, और नैऋत्य खाली रहता है। इस प्रमाण से विलोमपने करके शेषनाग फिरता रहता है, इसमें वृषादिक तीन संक्रांति तक ईशान में मुख होता है, सिंहादिक तीन संक्रांति तक वायव्य में मुख होता है, वृश्चिक वगैरह तीन संक्रांति तक नैऋत्य कोन में मुख होता है तथा कुम्भादिक तीन संक्रांति तक अग्नि कोन में मुख रहता है। शेषनाग अपने मुख नाभि और पूंछ सहित तीन विदिशाओं का स्पर्श करके रहता है, इसलिये तीन का त्याग करके पृथ्वी का खात कर्म करना चाहिये, क्योंकि शेष की नाभि मे खात कर्म करने से स्वामी की स्त्री मृत्यु को प्राप्त होती है, पूंछ में खोदने से धन का नाश होता है, मुख की तरफ खोदने से स्वयं स्वामी की मृत्यु हो, अतः भूमि खोदने के समय व शिला स्थापन करते समय तीनों अवयवों का त्याग कर देना चाहिये।

नींव धरन विचार

भूमि का स्वाद शक्कर के समान मीठा होवे तो चारों ही वर्णों को फल देने वाली होती है । भूमि नीची होवे, बहुत खुली हुई होवे, फटी हुई होवे, चूहे बहुत ज्यादा होवें तो उस भूमि में घर नहीं बनाना चाहिये । भूमि साफ स्वच्छ और चोकोर होवे तो नींव सवा दो गज नीची खोदनी, या सवा तीन गज खोदनी चाहिये । नींव खोदने के बाद नागफणा कीला गाड़े और उसी समय तेल सेंदूर की धारा दे, सुपारी, चॉवल, चांदी, ताम्र, दीपक, फूल, मोली, सात धान, गुड़, कुम कुम और इत्र चढ़ा कर पीछे नींव का पत्थर रक्खे, उसी समय कारीगर को व गजधर को रुपैया नारियल सिर पेच दे और तिलक करना चाहिये, यदि इस तरह से नींव का मुहूर्त करे तो सर्व श्रेष्ठ है ।

आयादिक विचार

समाधिक व्ययं कर्तुं समनाम यमांशकम् ।
विरुद्ध राशि नार च विनाऽन्यद्वेश्म शोभनम् ॥ १ ॥

जिस घर में अधिक व्यय (खर्च) आता होय तो

वह घर त्यागने लायक है, इसी प्रकार व्यय कम हो और आय अधिक हो तो वह श्रेष्ठ है। आय और व्यय विषम एकी होय तो स्थिर होने से अति श्रेष्ठ है क्योंकि कहा है कि— (कुर्यात् स्थिराधिकायं स्वयोनिभं शुद्ध तारांशम्) स्थिर और अधिक आय वाला अपनी योनि का नक्षत्र तथा शुद्ध तारा अंश वाला घर बनाना चाहिये। जिस घर का नाम तथा अक्षर कर्त्ता के नाम सम होय तो वह घर त्याग कर देना चाहिये। जिस घर में यम के अंश की उत्पत्ति होती होय, जिस घर में राशि के साथ स्वामी की राशि का शत्रु षडाष्टक दूसरे या बारवें उत्पन्न होते हों तथा जिस घर का तारा स्वामी के तारे से तीसरे, पांचवें या सातवें होय, वैसे ही मूल श्लोक में च शब्द लिखा है इसलिये जिस घर का नक्षत्र राक्षसगण में होय अथवा स्वामी के नक्षत्र की योनि के साथ विरुद्ध व बलवान् योनि वाला होय तो सब प्रकार के घर को छोड़ देना चाहिये।

आय से विरुद्ध घर होय तो रहने वाले को सुख नहीं हो, षडाष्टक हो तो मृत्यु हो, नव पंचम होय तो

पुत्र का मरण, सप्तम तारा होय तो स्वामी की मृत्यु, पांचवें तारा होय तो खुद की हानि, तीसरे तारा होय तो विपत्ति आवे और यमांश होय तो गृहपति का मरण हो। यहां नाड़ी वेध होय तो अच्छा है, क्योंकि नाड़ी वेध होय तो योनि को विरुद्धता वगैरह दुष्ट दोष नहीं मालूम देते।

ब्राह्मणादिक मुख द्वार विचार।

ब्राह्मणादिक चार वर्णों की अनुक्रम से विषम एवं ध्वजादिक आय करके अनुक्रम से पश्चिम वगैरह दिशाओं का द्वार वाला घर विद्वानों ने कहा है ब्राह्मणों को ध्वज आय वाला घर बनाना चाहिये, क्यों कि ध्वजा पूर्व दिशा में रहती है, अतः पश्चिमाभिमुख द्वार होने से वह ध्वजा ब्राह्मण को प्रवेश करते समय सम्मुख रहती है इसलिये शुभ है, इसी प्रकार सिंह के आय में उत्तराभिमुख वाला द्वार राजा का प्रासाद (महल) बनाना शुभ है, क्योंकि सिंह दक्षिण दिशा में रहा हुआ होने से प्रवेश करते समय सम्मुख पड़ता है। वैश्यों को वृष आय वाला पूर्वाभिमुख द्वार वाला घर बनाने योग्य है और

शूद्रों को गज (हाथी) आय वाला दक्षिणाभिमुख द्वार का घर बनाना शुभ है ।

सूत्रपात वगैरह मुहूर्त्त विचार ।

धनिष्ठा, हस्त, मैत्र (चित्रा, अनुराधा, रेवती, मृगशिर), स्थिर (रोहिणी उत्तराषाढ़ा उत्तराभाद्रपद), स्वाति शत तारका और पुष्य इतने नक्षत्रों से सूत्र की सिद्धि होती है याने इन नक्षत्रों में सूत्रपात करना चाहिये तथा शिला का स्थापन हस्त, पुष्य, मृगशिर, रेवती, ध्रुव (रोहिणी, तीन उत्तरा) और श्रवण इन नक्षत्रों में प्रशस्त होता है। तिथि तथा वार की शुद्धि तो रिक्ता वगैरह का त्याग करने से स्पष्ट हो जाती है । एकादशी, द्वितीया, पंचमी, सप्तमी, तृतीया, प्रतिपदा, दशमी, त्रयोदशी, और पूर्णिमा तथा रविवार, सोम, गुरू, बुध, और शुक्र इतनी तिथियों में तथा इन वारों में समृद्धि की इच्छा रखने वाले पुरुष सूत्रपातादिक कार्य को करें ।

गृहारम्भ में लग्नबल विचार ।

लग्न तथा चन्द्र चर से अन्य स्थान में होय, या

स्थिर अथवा द्विस्वभाव वाला वृष, सिंह, वृश्चिक, और कुम्भ, मिथुन, कन्या, धन, और मीन, लग्न होय और चन्द्र फिर स्थिर अथवा द्विस्वभाव वाली राशी में रहा होय, तथा दोनों शुभ ग्रह युक्त व उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि पड़ती होय, तथा चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र सौम्य ग्रह कर्म दशम स्थान में रहा होय तो उस समय घर का आरम्भ शुभ करने वाला है।

गृह प्रवेश विचार।

स्वच्छ वस्त्र विनय पूर्वक धारण करके मंगल की बुद्धि वाला राजा से लेकर सामान्य मनुष्य तक सौम्य अयन में दिन के पहिले भाग मे अर्थात् (सूर्योदय वेला) गृह देवता की पूजा दश दिग्पाल पूजा करके गृह प्रवेश करे। यहां सौम्य अयन अर्थात् उत्तरायण जानना क्योंकि कहा है कि—(सौम्येऽयने कर्म शुभं विधेयं, यद्गर्हितं तत्खलु दक्षिणेच) सौम्य अयन याने उत्तरायण में शुभ कार्य करना चाहिये, जो निन्दित कार्य हैं वे दक्षिणायन में करना, यहां कार्य में इतना विशेष है कि—

मासादि संख्या नियतं सीमन्तोन्नयनादिकम् ।
याम्यायनादौ तत्सर्वं क्रियमाणं न दुष्यति ॥ १ ॥

जो शुभ कार्य में मासादिक की संख्या का नियम किया हुआ होय एवं सीमंत वगैरह सर्व कार्य दक्षिणायनादिक में करने से दोष नहीं, त्रिविक्रम में भी कहा है कि अधिक मास तथा क्षय मास इस कार्य में निंद्य नही समझा जाता ।

गृह प्रवेश में वार तथा नक्षत्र का विचार

रविवार तथा मंगलवार को छोड़ कर दूसरे वारों में पुष्य, ध्रुव संज्ञा वाला (रोहणी और तीन उत्तरा) स्वाति धनिष्ठा मृदु संज्ञा वाले (मृगशिर, चित्रा, अनुराधा और रेवती) तथा शतभिषक् इन नक्षत्रों में सूर्य को वांयीं तरफ रखकर पूर्ण कलश सहित घर में प्रवेश करना, या जिस दिशा की तरफ घर का मुख द्वार होय व उसी दिशा का नक्षत्र होय तो विशेष शुभ है । प्रवेश करते समय गोचर और अष्टक वर्ग की विधि करके चन्द्र अनुकूल होय रिक्ता तिथि न होय तथा विष्कुम्भादिक कुयोग

न हो तो समझना चाहिये कि अपने मेल का सब मिल गया है उसी समय प्रवेश कर लेना चाहिये इसके लिये व्यवहार प्रकाश में कहा है :—

नारेन्द्वोर्बलकाले तिथावरिक्ते ऽह्नि शुभदस्य,

तारा और चंद्र बल होय उस समय रिक्ता तिथि को छोड़ कर दूसरी तिथियों में व अच्छे दिन में प्रवेश करे। पहिले कह चुके हैं कि रविवार और मंगलवार को छोड़ कर प्रवेश करें, इसका कारण यह है कि रवि और मंगल यह दोनों बार रोग तथा रक्त प्रकोप के करने वाले होते हैं

वर्ज्य नक्षत्रों का फल दवज्ञ वल्लभ में कहा है ।

विशाखासु राज्ञी सुतो दारुणेषु प्रणाशं, प्रयात्युग्रभेषु क्षितीशः गृह दग्धते वह्निना वह्नि धिष्ण्ये चरैः, क्षिप्रधिष्ण्यैश्च भूयोऽपि यात्रा ॥१॥ विशाखा नक्षत्र मे गृह प्रवेश करने से राणी का नाश हो दारुण नक्षत्रों में प्रवेश करने से पुत्र का नाश हो, उग्र नक्षत्रों मे प्रवेश करने से राजा का नाश हो, कृत्तिका नक्षत्र में प्रवेश करने से वह घर अग्नि से भस्म हो जाय, तथा चर और क्षिप्र नक्षत्रों में प्रवेश करने से यात्रा बारम्बार करता रहे ।

सर्व ग्रहों को छोड़ कर यत्न पूर्वक जो प्रवेश का नक्षत्र लिया होय वह तारीफ के लायक है कितने ही मुनियों ने कहा है कि प्रवेश का नक्षत्र सौम्य (रवि मंगल और शनि वर्जित) ग्रहों करके सहित हो तो वह शुभ कारक है। नवीन घर में प्रवेश करना होय तो शुक्र का सम्मुखपना छोड़ना योग्य है इसके लिये त्रिविक्रम में कहा है कि :—

त्यजेत् कुतारां प्रस्थाने शुक्राज्ञौ गृह वेशके।
यात्रासु च नवोढ स्त्री वर्जं संमुख दक्षिणौ ॥१॥

प्रस्थान करते समय कुताराओं को छोड़ना, नवीन विवाह वाली स्त्री को छोड़कर दूसरे गृह प्रवेश में यात्रा मे सम्मुख के दाहिनी तरफ रहा हुआ शुक्र और बुध छोड़ देना चाहिये।

गृह स्थापन और गृह प्रवेश में क्रूर ग्रह विचार

नवीन घर का आरम्भ करते समय क्रूर ग्रह (रवि-मंगल-शनि-राहु) तीसरे, छट्टे तथा एकादश (ग्यारहवें)

स्थान में होय तो उत्तम है, सौम्य ग्रह केन्द्र (१-४-७-१०) स्थान में रहा हो तथा त्रिकोण (९-५) स्थान में होय तो उत्तम है क्रूर ग्रह आठमे स्थान में रहे हॉय तो अत्यन्त अशुभ है वाकी के ग्रह अष्टम स्थान में रहे हों तो वे मध्यम है (१) गृह प्रवेश करते समय क्रूर ग्रह केन्द्र (१-४-७-१०) स्थान अष्टम स्थान में तथा बारहवें स्थान में हों तो वे अशुभ है। सर्व ग्रह तीसरे तथा गीयारवें स्थान में रहे हॉय तो वे उत्तम हैं क्रूर ग्रह दूसरे स्थान म होय तो अधम हैं वाकी के मध्यम हैं।

सूतिका ग्रह प्रवेश विचार

सूतिका गृह का निर्माण पुनर्वसु नक्षत्र में कहा है और उसमें प्रवेश करने का अभिजित् तथा श्रवण दो नक्षत्रों के बीच में कहा है यहां पुनर्वसु इन नक्षत्रों के लेने का कारण यह है कि इनके स्वामी देव माता है, तथा अभिजित् और श्रवण के बोच में प्रवेश करने के कारण यह है कि इनके स्वामी ब्रह्मा व विष्णु हैं। इसलिये प्रवेश करने में अति उत्सुकता होय तो इन दो नक्षत्रों के उदय लग्न में प्रवेश करना चाहिये।

इति श्री भावी विज्ञानस्य गृह निर्माण तृतीयो निमित्तः।

इहलोक परलोक सुख प्राप्ति उपाय

स्वरोदय निमित्त

मनुष्य को चाहिये कि रात्रि के समय जब सोना चाहे तब जो कार्य भले बुरे दिन भर में किये हों उनको विचार के फिर जो भला कर्म बना हो उसको पार्श्व की दया समझें और जो बुरा कर्म बन गया हो तो उसका दोष अपनी आत्मा पे लेके फिर उसके त्याग की प्रतिज्ञा करनी चाहिये।

दूसरा साधन

सर्गुण स्वर से (सो) और निर्गुण स्वर से (हं) प्रकाश करता है दोनों पद मिलके एक पद (सोऽहं) हुआ, इस पद का जप सब जीवों की नासिका के द्वारा रात दिन स्वयमेव निकलता है, इस का अर्थ यह है कि जो वह है वह मैं हूं, जो मनुष्य इसमें मन लगाकर निशि दिन इसी के ध्यान में रत रहे तो वह महा पुरुषों की उपाधि को प्राप्त करता है, व सदा के लिये अविद्या का अन्धकार हटा कर विद्या का प्रकाश कर लेता है।

तीसरा साधन भक्ति से

गुरु भक्ति, पार्श्व भक्ति, धर्म भक्ति, (साधना भक्ति) भक्ति के तीन भेद हैं। गुरु भक्ति गुरु को परम दयालू जानकर मन, वचन और काया से रात दिन ऐसी सेवा करे, साधु योगी की सेवा तन, मन और धन से जहां तक बने वहां तक करे यदि अपने पास धन न हो तो जिस प्रकार बने उसी प्रकार उपकार सेवा करे। पार्श्व भक्ति, इसके दो भेद है, पहिले मानसिक याने मन करके अपने इष्टदेव के ध्यान में मग्न रहना चाहिये। सच्ची प्रीति से मन को शुद्ध करके अर्थात् पार्श्व को सब वस्तुओं में देखने लगे, तब शीघ्र ही दिव्य दृष्टि हो जावेगी। दूसरी परमात्मसेवा इसमें मूर्त्ति का भावन अपने दिल में जाने याने साक्षात् पार्श्वनाथ जानके बाल्यावस्था से लेकर मोक्ष पर्यंत जो कुछ भी उन्होंने अच्छे कर्म किये हैं उनका चिंतवन करे, और मन, वच, काया से उन्हीं के ध्यान में निरन्तर चित्त रक्खे।

साधना भक्ति, अपनी आत्मा में जब निर्मल ज्योति प्रगट हो जावे तब स्वात्मा में लीन होकर स्वर साधन व तत्वों का साधन करना चाहिये, अब तत्वों का विचार व स्वर साधन लिखते हैं।

तत्व की शकल अपने नेत्र से देखने की रीति

मनुष्य को चाहिये कि जब एक प्रहर रात्रि बाकी रहे तब सिंह आसन बैठ के अर्थात् दोनों गोड़ों को पृथ्वी में जमा के पैरों को चूतड़ों के नीचे रक्खे सीधा बैठके दोनों हाथों के पंजों को उलट के गोडों पे इस तरह रक्खे कि अंगुलियों के सिर पेट की तरफ रहें, फिर दोनों नासिका पर दृष्टि बांध कर आते जाते तत्वों को देखे, ऐसे दो मुहूर्त्त करना चाहिये, छह मास में जैसी की तैसी तत्वों की सूरत दिखाई देने लगेगी, जब तत्वों की मूर्ति नजर आने लगे तब समझ लेना चाहिये कि तत्व तो सिद्ध हो चुके अब हानि लाभ का विचार स्वरों के भेद जानने की कोशिश करे उसको लिखते हैं ।

स्वरों के तीन भेद होते हैं, ईड़ा, पिंगला, सुषमना, तिथि, वार राशि आदिक एक एक के संग अलग २ हैं उनके जानने के लिये चार कोठे का यन्त्र बतलाते हैं पहिला कोठा स्वर, पक्ष और वारादिक के नाम, दूसरा कोठा पिंगला का उसके नीचे के कोठों में उनके साथियों का व्यौरा ऐसे ही तीसरा चौथा कोठा ईड़ा और सुषमना का है ।

यन्त्र

१	२	३	४
स्वरादिक नाम	पिंगला के साथियों के नाम	ईड़ा के साथियां के नाम	सुषमना के नाम
स्वरों के नाम	पिंगला और सूर्य दाहिने स्वरका नामहै तासीर गर्म	ईड़ा और चन्द्र बांये स्वर का नाम है तासीर सर्द	दोनों स्वर संग चलं उसे सुषमना जानना
देवताओं के नाम	शिव	ब्रह्मा	विष्णु

वारों के नाम	शनि रवि मंगल	सोम बुध बृहस्पति शुक्र
दिशाओंके नाम	पूर्व उत्तर	दक्षिण पश्चिम
तत्वों के नाम	वायु अग्नि	जल पृथ्वी आकाश
ओड़	पीछे नीचे दाहिने	आगे ऊंचे बांयें
प्रश्न के अक्षर	ऊने जैसे १, ३, ५,	पूरे जैसे २, ४, ६, ८, १०,
राशियों के नाम	मेष कर्क तुला मकर	वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ, मिथुन, कन्या, धन, मीन,

पक्षों के नाम

पक्षों के नाम	कृष्ण पक्ष के दिन में ९ दिन सूर्य ६ दिन चन्द्र मनुष्य के शरीर में रहता है । सूर्य के दिन ९ चन्द्र के दिन ६ १, २, ३, ७, ८, ४, ५, ६, ९, १३, १४, १०, ११, अमावस । १२ ।	शुक्र पक्ष के १५ दिन में ९ दिन चन्द्र ६ दिन सूर्य मनुष्य के शरीर में अपने २ समय पर रहता है चन्द्र के दिन ९ सूर्य के दिन ६ १, २, ३, ७, ४, ५, ६, ८, ९, १३, १४ १०, ११, पूनम । १२ ।
चौघड़िया सूर्य चन्द्र का	कृष्ण पक्ष में सूर्य के प्रकाश होते ही पहली ४ घड़ी में सूर्य का अमल दूसरी ४ घड़ी में चन्द्र का अमल फिर सूर्य चन्द्र का अमल रहता है ।	शुक्र पक्ष में रात्री के समय से पहिले ४ घड़ी में चन्द्र का अमल दूसरी ४ घड़ी में सूर्य का अमल फिर सूर्य का अमल रहता है ।

बारह राशियां जो रात दिन की ६० घड़ी में भुगतते हैं उनका चौघड़िया।

राशियों के नाम	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
राशियों के रंग	लाल	सुपेद	हरा	पीला	धूम्र	कृष्ण पांडु	कृष्ण पांडु	भूरा	सुनहरी	पीला	बिल्ली के नेत्र सम	नेवले के सम
घड़ी	३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३
पल	३८	११	३	४३	४७	३८	३८	४७	४३	३	११	३८

अब प्रश्नोत्तर की सूक्ष्म रीति लिखते हैं मनुष्यों को चाहिये उन चार कोठे के यन्त्र को जिसमें स्वरों के चार भेद वतलाये हैं उसको अच्छी तरह समझ कर उत्तर दिया करें।

स्वरों के नाम और गुण

निर्गुण स्वर वाहिर आवे तो प्रश्नी प्रश्न स्वर में करे तो कार्य सिद्ध न हो।	सगुण स्वर भीतर जाय उस समय प्रश्नी प्रश्न करे तो वह अपनी आशा पावे	उदय स्वर वांई ओर से दाहिनी ओर फिरे	अस्त स्वर दाहिनो ओर से वांई ओर फिरे

पांच प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देने की रीति

प्रश्न १ स्त्री गर्भवती है उसके वेटा होगा या बेटी	प्रश्न करने के समय जो प्रश्न करने वाला और वक्ता अर्थात् उत्तर देने वाला–दोनों के दाहिने स्वर हों तो बेटा, भाग्यवान् और उम्र वड़ी हो। दोनों के वांयें स्वर हों तो वेटी, भाग्यवान् वडी उम्र को हो। पूछने वाले का बांयां उत्तर देने वाले का दाहिना स्वर हो तो वेटा पैदा होके मर जाय।

पूछने वाले का दाहिना उत्तर देने वाले का वांयां स्वर हो तो बेटी पैदा हो के मर जावे। जो दोनों के स्वर सुषमना हों तो बेटे का जोड़ा पैदा हो आकाश तत्व में प्रश्न करे तो गर्भ जाता रहे या हींज नपुंसक हो। जो पूछने वाला बांई ओर बैठ के प्रश्न करे और वक्ता का स्वर दाहिना हो तो बेटा पैदा हो, किन्तु उसकी माता मर जावे। जल-पृथ्वी के तत्व में प्रश्न करे तो बेटा पैदा हो, पवन तत्व में प्रश्न करे तो बेटी हो और अग्नि तत्व में प्रश्न करे तो स्त्री का हमल गिर जाय।

प्रश्न २-स्त्री गर्भ से है या नहीं

पूछने वाला चलते स्वर की ओर से प्रश्न करे तो स्त्री गर्भ से नहीं है, यदि बंद स्वर की ओर से प्रश्न करे तो गर्भ है।

प्रश्न ३ परदेश से फलाना कब आवेगा

प्रश्न करने के समय पृच्छक और वक्ता के दाहिने स्वर हों तो परदेशी परदेश से जल्दी आवेगा यदि दोनों के स्वर बांयें हो तो परदेशी के आने में देरी है, और जो एक का बायां एक का दाहिना हो तो परदेशी अभी नहीं आवेगा।

प्रश्न ४ परदेश अथवा और कहीं जाने में आशा पूर्ण होगी या नहीं	प्रश्न करने के समय पृच्छक और वक्ता दोनों के एक ही स्वर हों दाहिना अथवा बांया और दिन, राशि प्रश्नाक्षर पृच्छक के बैठने की ओर उसी स्वर के साथी हों तो मन का आशा पूर्ण हो राश्यादिक में कुछ इस स्वर के साथी कुछ दूसरे स्वर के साथी देरी से आशा पूर्ण होवेगी । पृच्छक वक्ता के स्वर अलग २ हों और राश्यादिक में भी भेद हो अथवा सुषमना में प्रश्न करे तो कभी अभिलाषा पूर्ण न होगी ।
प्रश्न ५ बीमारी के हटने का	पृच्छक जिस ओर से प्रश्न करे तत्व और स्वर उसी ओर के साथी हों तो बीमारी जल्दी हट जावे यदि स्वर तत्वादिक परस्पर में साथी न हों तो बीमारी बढ़े, और जो पृच्छक चलते स्वर की तरफ से उठ के बन्ध स्वर की तरफ जाके प्रश्न करे तो बहुत देरी में बीमारी हटे, यदि आकाश तत्व और सुषमना स्वर में प्रश्न करे तो बीमार बहुत कष्ट पावे, पवन तत्व में प्रश्न करे तो बीमार नहीं बचे यदि और तत्वों में प्रश्न करे तो बीमारी हटे ।

जो कार्य दाहिने स्वर में करने चाहियें और जो वांये स्वर में करने के हैं, उनको दिखलाते हैं।

दाहिने स्वर में उन कार्यों को करना जो चर हों अर्थात् चलते हुये जिससे जल्दी निश्चिन्त हो जावे जैसे रसोई खाना जिससे शीघ्र हो पच जावे, युद्ध में जाना, टट्टी जाना, विषय करना, स्नान, बाण व विद्या का सीखना, घोड़े पर सवार होना, कार्य लेना, कार्य देना, व्यापार करना, बीमार का इलाज करना नौका पर सवार होना, स्वरों के रोकने का अभ्यास करना, शिकार जाना, वैरी के घर जाना, मित्र के मिलाप को जाना, यात्रा करना आदि कार्य करने चाहिये।

वांये स्वर में जो स्थिर हों अर्थात् बहुत काल तक ठहरें जैसे मकान की नींव लगाना, हुकूमत की गद्दी पर बैठना, मकान में प्रवेश करना, विवाह करना, कपड़े बनवाना, नवीन वस्त्र पहनना, औषधालय खोलना, गांव बसाना, नौकरी करना, परदेश से फिरना, खेती करना, खेत में बीज डालना, वस्तु का मोल लेना, मानसिक सेवा में ध्यान लगाना, बगीचा, कुआ, कुण्ड, नहर, आदि

का वनाना, लघु शंका, पुण्य करना, पानी पीना एवं मित्रता करना यह सम्पूर्ण कार्य वांये स्वर में।

सुषमना में सिवा आत्म ध्यान के और कुछ कार्य नहीं करना चाहिये।

सर्गुण में कार्य करे उसको लिखते हैं

सर्गुण में जो कार्य किया जाय उसका बड़ा लाभ है जैसे दीपक में तेल भरके बत्ती जलावे तो वह दीपक सन्ध्या से सवेरे तक जलता रहे, वैसे ही जब कहीं आग लगे तो एक लोटा जल का कूये से मंगाकर अग्नि की ओर मुख करके एक दम में सर्गुण के साथ चढ़ा जावे तो अग्नि आगे नहीं बढ़े जहां की तहां ही शीतल हो जावेगी। यदि किसी वैरी से मिलाप करने की इच्छा हो तो एक पात्र में जल लेकर सूर्य के सन्मुख नासिका के रास्ते सर्गुण में चढ़ाया जावे तो अल्प समय में ही वैरी के चित्त में वैर भाव नहीं रहेगा।

युद्ध में किस समय जाना

पवन तत्व में सवार हो तो वैरी से जीत के आवे

पृथ्वी तत्व में सवार हो तो वैरी से मिलाप करके आवे जल तत्व में सवार हो तो भ्रम चित्त हो के भगे, अग्नि तत्व में सवार हो तो लड़ाई जीते अथवा वैरी से मिलाप हो, आकाश तत्व में सवार हो तो शहीद हो जो सुषमना में सवार हो तो फिर के घर न आवे इसलिये सुषमना में और ईडा में सवार नहीं होना चाहिये। पिंगला में सवार हो तो लड़ाई जीत के आवे यदि दोनों एक ही स्वर में सवार होवें तो पहिले जो सवार हुआ उसकी जीत हो युद्ध के समय जिस मनुष्य की पीठ दक्षिण या पश्चिम की ओर होगी वही जातेगा।

नवीन वर्ष के हानि लाभ का विचार

जिस समय मेष संक्रांति या चैत्र शुक्ला प्रतिपदा लगे उस समय तत्वों का विचार करे, जल या पृथ्वी तत्व बांये स्वर से जारी हों तो सब प्रकार से सुख चैन की प्राप्ति हो, खेती अच्छी हो संसारी लोक खुशी रहें। जल या पृथ्वी तत्व दाहिनो ओर से जारी हो तो वर्षा असमय में हो और अन्न का भाव अच्छा न रहे घास पैदा न हो। अग्नि तत्व दाहिनी ओर से

जारी हो तो वर्षा अल्प हो बीमारी बढ़े अकाल पड़े। वायु तत्व बांई ओर से जारी हो तो वर्षा कुसमय में हो अन्न का भाव पिछले वर्ष से चौथाई रह जावे, देश २ के राजा परस्पर वैर भाव करें इसलिये प्रजा में दुःख हो। आकाश तत्व बांई ओर से दृष्टि पड़े तो एक बिंदु मात्र वर्षा नहीं हो, जो सुषमना हो तो इतनी वर्षा हो कि बीज गल जावे और नया राजा गद्दी पर बैठे व इसके विचारने वाले की वर्ष के अंत में मृत्यु हो।

यात्रा गमन व्यापार लाभ विचार।

पूर्व या उत्तर दिशा को जाय तो दाहिने स्वर में गमन करे इस बात को विचार ले कि तिथि, वार, घड़ी, पल, राशि, दिशा आदि दाहिने स्वर के साथी हों और गमन के समय प्रथम दाहिना पैर उठाके तीन पैंड़ चले फिर खड़ा होके दाहिना पैर उठा के चला जाय तो आशा पूर्ण हो। दक्षिण या पश्चिम की ओर बांये स्वर में गमन करना चाहिये परन्तु तिथि, वार, राश्यादि स्वर के साथी हों गमन के समय प्रथम

वांया पैर उठाके चार पैंड़ चले फिर कुछ समय ठहर कर वाम पैर उठा के चला जावे तो आशा पूर्ण हो। सुषमना स्वर आकाश तत्व में गमन करे तो वापिस घर में न आवे। अपने मालिक, पिता, गुरू, भ्राता, मुरब्बी, किसी भूल पर क्रोधित होके दण्ड या सजा देने को बुलावें तो निःसन्देह गमन के समय जौन सा स्वर चलता हो वह ही प्रथम पैर उठाके जाय और मालिक के सामने पहुँचे तब अपने स्वर को देखे यदि वाम स्वर होवे तो मालिक के दाहिनी ओर और, दाहिना स्वर हो तो मालिक के बांई ओर खड़ा होके मालिक के प्रश्न का उत्तर देता जावे तो कुशल पूर्वक विदा होके आवे और मालिक पहिले से भी ज्यादा कृपा दृष्टि रक्खे।

पक्ष में अपने शरीर के सुख दुःख का विचार।

कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को बहुत सवेरे के समय सोता हुआ मनुष्य दक्षिण स्वर में जगे तो मस्तक से कोई बीमारी पैदा हो, यदि बीमारी हटानी हो तो जब तक बीमारी हटे नहीं तब तक पुरानी रुई से वाम नासिका बन्द रक्खे तो शीघ्र ही आराम हो, ऐसे ही

शुक्ल पक्ष को प्रतिपदा के सवेरे सोता हुआ मनुष्य यदि वाम स्वर में जगे तो १५ दिन तक निरोग रहे। दक्षिण स्वर में जगे तो कोई गरमी की बीमारी हो उसके हटाने के लिये दक्षिण नासिका को पुरानी रुई से बन्द रखना चाहिये ताकि बीमारी शीघ्रता से दूर हो।

प्रतिदिन सुख दुःख विचार।

सोम, बुध आदि वारों को सोता हुआ मनुष्य सवेरे वाम स्वर में जागे तो दिन भर सुखी रहे। सूर्य के साथ दक्षिण स्वर में जागे तो मन में कुछ चिंता उत्पन्न हो। शनि, और आदित्यवार को दक्षिण स्वर में जागे तो निःसंदेह रहे, और जो चन्द्र के साथ वाम स्वर में जागे तो कुछ चिंता पैदा हो, जो मनुष्य दिन में वाम स्वर और रात्रि में दक्षिण स्वर चलता रक्खे तो अवश्यमेव शरीर में किसी प्रकार का रोग पैदा नहीं हो सकता और आलस्य नहीं रहे, चैतन्यता दिन प्रतिदिन बढती रहे उसका ऐसे १२ वर्ष क्रम से स्वरों का साधन जारी रहे तो निश्चयात्मक सर्प विच्छू का (विष) जहर असर नहीं करता है।

स्वरों के पलटने की रीति ।

दिन में दाहिनी नासिका और रात्रि में वाम नासिका को पुरानी रूई से बन्द रखनी चाहिये, तब दिन में वाम स्वर और रात्रि में दक्षिण स्वर चलता रहेगा । कदाचित् मनुष्य को स्वर का पलटना दिन रात्रि में जरूरी हो तो दाहिनी करवट के लेने से वाम स्वर और बांई करवट के लेने से दक्षिण स्वर जारी हो जाता है ।

गर्भ विचार ।

स्त्री के गर्भ रहने का व्यौरा तत्वों के और स्वरों के विचार से जो अग्नि या वायु तत्व में दक्षिण स्वर की ओर से गर्भ रहे तो पुत्र, भाग्यवान, शुभ लक्षण वाला पैदा हो जो इन्हीं तत्वों में वाम स्वर की ओर से गर्भ रहे तो पुत्री पैदा हो, स्त्री के मग़ज़ में वीर्य के दोष से शरीर में विकार उत्पन्न हो । जल या पृथ्वी तत्व में वाम स्वर की ओर से गर्भ रहे तो पुत्री सौभाग्यवती, शुभ लक्षणों वाली पैदा हो ।

जल या पृथ्वी तत्व में दाहिने स्वर की ओर से

गर्भ रहे तो पुत्र हो, परन्तु दो चार दिन बाद पुत्र या माता की मृत्यु हो अथवा छ सात मास का गर्भ जाता रहे। आकाश तत्व में गर्भ रहे तो गर्भ उदर में ही विलीन हो जावे, जो सुषमना में गर्भ रहे तो गर्भ प्रेत बाधा से गिर पड़े अथवा पुत्र पैदा हो तो योगी महा-पुरुषों में बडा यश वाला हो।

छाया पुरुष साधन विचार।

सूर्य या चंद्रवार को दीपक के प्रकाश में मनुष्य खड़ा होके अपनी छाया की नाड़ी पर प्रतिदिन पांच घड़ी तक देखे फिर पांच घड़ी पीछे वहा से दृष्टि उठाके एक दृष्टि सन्मुख देख लिया करे इसी तरह करते रहने से कुछ समय में छाया पुरुष दूर पर पीठ दिये हुये दृष्टि पड़ेगा फिर शनैः २ पास में आते २ आपके सन्मुख छः मास में आवेगा। अपनी मूर्त्ति का पुरुष दीखेगा साधना पूर्ण होगी जो प्रश्न छाया पुरुष से करोगे उत्तर मिलेगा उससे मनुष्य सिद्ध कहलावेगा।

काल ज्ञान विचार।

प्रथम दाहिने हाथ की मुट्ठी बांध के मस्तक पर

लगाके पहुँचे पर दृष्टि रक्खे छः मास पहिले मुट्ठी और हाथ अलग २ दीखेंगे, दूसरे दाहिने हाथ की मध्यमा की मोड़ के अंगुष्ठ की जड़ में लगाके बाकी रही अंगुलियां को पृथ्वी पर जमाकर एक २ को उठा के फिर जहा की तहां स्थित करदे मध्यान्ह समय में पहिले मृत्युकाल से अनामिका अंगुली उठेगी। तीसरे दाहिना स्वर मृत्यु से दो वर्ष पहिले २ दिन बराबर चलता रहेगा। एक वर्ष पहिले पांच दिन, छः मास पहिले पन्द्रह दिन, तीन मास पहिले बीस दिन, बीस दिन पहिले ३ दिन बराबर चलता रहेगा। एक वर्ष पहिले आकाश तत्व तीन दिन बराबर चलता है।

दोहा—स्वासन २ पार्श्व रट, वृथा स्वास मत खोय।
ना जाने या स्वास को, अंत कहूँ यहीं होय॥

॥ इति भावि विज्ञानस्य स्वरोदय नामक चतुर्थः निमित्तः॥

---

(५) रत्न परीक्षा।

१ माणक—लाल रग का होता है।

२ हीरा—श्वेत व गुलाबी रंग का होता है।

३ पन्ना—सब्ज़ व गुलाबी रंग का होता है।

४ नीलम—नीला रंग व गुलाबी रंग का होता है।

५ लसनिया—बिल्ली की आँख के समान होता है।

६ मोती—श्वेत कहीं २ पीला व गुलाबी पाया जाता है।

७ मूंगा—लाल रंग का होता है।

८ पुखराज—पीला, सफेद व नीले रंग का होता है।

९ गोमेदक—लाल धूंवे के समान होता है।

१० लालडी—गुलाब के फूल के समान होता है और चौबीस रत्ती के ऊपर होने से लाल कहाता है।

११ फिरोजा—आसमानी रंग का होता है किन्तु यह पत्थर नहीं कंकर में पैदा होता है।

१२ ऐमनी—अधिक लाल कुछ श्याम रंग का होता है, इसे यवन अधिक पसंद करते हैं।

१३ ज़बरजद—निर्मल-सब्ज़ रंग का होना है किन्तु
इसमें सून नहीं पड़ता।

१४ ऊपल—रंग नाना प्रकार का होना है किन्तु इस पर
एक रंग का अब्र पड़ता है।

१५ तुरमली—रंग पांच प्रकार का होना है किन्तु
जाति पुखराज की होनी है।

१६ नरम—लाल, ज़रद रंग का होता है।

१७ सुनहला—सोने में धूंवे के समान होता है।

१८ धूनेला—सोने के धूंवे के समान होना है।

१९ कटेला—बैंगन के समान रंग होता है।

२० संगी सितारा—बहुत प्रकार का रंग किन्तु ऊपर
सोने का छींटा होता है।

२१ फटिक बिल्लौर—सफेद रंग का होता है।

२२ गौदन्त—गौ के दांत के समान कुछ ज़र्दी लिये
हुये सफेद रंग का होता है।

२३ तामडा—काला व सुर्ख़ रंग का होता है।

२४ लुधिया—चिरमी के समान लाल रंग का होता है।

२५ मकनातीस—कुछ श्यामपन लिये बाकी सफेद रंग का होता है।

२६ सिन्दूरिया—सफेदपन लिये कुछ गुलाबी रंग का होता है।

२७ लीलो—जाति नीलम की, किन्तु नीलम से कुछ ज़र्द व नरमपन में होता है।

२८ मरियम—सफेद रंग किन्तु पालिशदार होता है।

२९ वैरूज—हल्का सब्ज़ रंग का होता है।

३० मरगज—जाति पन्ने की किन्तु रंग सब्ज़ इसमें पानी नहीं होता।

३१ पितोनिया—सब्ज़ के ऊपर सुर्ख़ छींटेदार रंग होताहै।

३२ बांसो—सब्ज़ हल्का रंग किन्तु संगे सम से नरम होता है।

३३ दुरेनजफ़—कच्चे धान के समान रंग व पालिश अच्छा होता है।

३४ सुलेमानी—काला ऊपर सफेद डोरा होता है।

३५ अलेमानी—भूरा रंगदार ऊपर डोरा व सुलेमानी जाति होती है।

३६ जजेमानी—रंग पाश का ऊपर डोरा व सुलेमानी
जाति होती है ।

३७ सिवार—सब्ज ऊपर भूरे रंग की रेखा होती है।

३८ तुरसावा—गुलाबीपन लिये कुछ ज़र्द व पत्थर
इसका नरम होता है।

३९ अहवा—गुलाबी ऊपर बड़े २ छींटे होते है।

४० आवरी—कालापन लिये सोने के माफ़िक होता है।

४१ लाजवर्द—नील-रंग ऊपर सब जगह सोने का
छींटा होता है ।

४२ कुदरत—काला ऊपर सफेद व ज़र्द चिन्ह होते हैं।

४३ चित्ती—काला ऊपर से सोने का छींटा और सफेद
डोरा होता है ।

४४ संगे सम—जाति अंगूरी व सफेद होती है ।

४५ लास—जाति मारवर की होती है ।

४६ मारवर—रंग पाश के माफ़िक, व लाल सफेद रंग
मिला हो तो मकराना कहते है ।

४७ दाना फिरंग—पिस्ते के माफ़िक कुछ सब्ज़ होता है।

४८ कसोटी—काला रंग सोने की परीक्षा होती है।

४९ दारचनी—दारचीनी के माफ़िक रंग, यवन लोग इस पत्थर की तस्वी वनाते हैं ।

५० हकीक कुल वहार—सब्ज़पन के साथ जर्दपन लिये होता है, जिसकी मुसलमान लोग माला वनाते हैं ।

५१ हालन—गुलावी मैला रंग हिलाने से हिलता है ।

५२ सिजरी—सफेद ऊपर श्याम वृक्ष सम मालूम देता है ।

५३ सुबेनजफ—सफेद रंग किन्तु बाल सम लकीर होती है ।

५४ कहरवा—पीला रंग जिसका वोरखा होता है व माला होती है ।

५५ भरना—मटिया रंग जिसमें पानी देने से सब पानी भर जाता है ।

५६ संगवसरी—काला रंग आंखों के सुरमे में पड़ता है ।

५७ दांतला—ज़रदपन लिये सफेद किन्तु पुराने शंख सम होता है ।

५८ मकडी—सादापन लिये काला रंग ऊपर मकड़ी के जाल सम होता है ।

५९ संगोया—संख सम सफेद रंग, जिसका घड़ी का लाकेट बनता है।

६० गुदरी—नाना प्रकार का रंग होता है।

६१ कासला—सब्ज़पन लिये सफेद रंग का होता है।

६२ सिधरो—सब्ज़पन लिये आसमानी रंग का होता है।

६३ हदीद—भूरापन लिये श्याम रंग, तोल में भारी होता है। यवन लोग जिसकी माला से जप करते हैं।

६४ हवास—सोनापन लिये सब्ज़ होता है औषधि मे काम आता है।

६५ सीगली—स्याही और सुर्खी मिला हुआ रंग जाति माणिक की होती है।

६६ ढेडी—काला रंग इसके खरल तथा कटोरे बनते हैं।

६७ हकीक—सब प्रकार का रंग, छड़ी का मूठा, कटोरे और खिलौने बनते हैं।

६८ गोरी—सब प्रकार का रंग तथा सफेद सूत होता है, इसके कटोरे तथा जवाहर तोलने के बाट बनते हैं।

६९ सोचा—काला रंग, इसको नाना प्रकार की मूर्ति
बनती है ।

७० सीमाक—लाल, ज़र्द कुछ स्याह मैला होता है,
ऊपर सफेद, ज़र्द और गुलाबी छींटा
इसके खरल व कटोरे बनते है ।

७१ मूसा—सफेद मटिया रंग, इसके कटोरे व खरल बनते हैं ।

७२ एनथन—कुछ सब्ज़पन लिये काला रंग का होता है ।

७३ अमलोया—कुछ कालापन लिये गुलाबी रंगका होताहै ।

७४ टूर—कत्थे के समान रंग, इसका खरल बनता है ।

७५ तिलोयर—काला ऊपर सफेद छींटा इसका भी खरल
बनता है ।

७६ खारा—सब्ज़पन लिये काला रंग, खरल के ही
काम में आता है ।

७७ पायजदार—सफेद पाश के समान रंग, विष के
घाव पर घिस कर लगाने से घाव सूख जाता है ।

७८ सिरखडी—मिट्टी के समान रंग, खिलौना बनता
है; घाव पर लगाने से घाव भर जाता है ।

७९ जहर मोहरा—कुछ सफेद पनलिये सब्ज़ रंग, कोई

चीज में इसको मिलाकर कटोरे में रख देने से विष का दोष जाता रहता है।

८० खात—लाल रंग, जिसको रात्रि में ज्वर आता हो तो गले में बांधने से आराम होता है।

८१ सोन मक्खी—नील रंग, औषधियों में पड़ती है।

८२ हज़रुलयहूद—सफेद मिट्टी के समान मूत्र की बीमारी में लाभ पहुंचाता है।

८३ सुरमा—काला रंग, अंजन के काम में आता है।

८४ पारस—काला रंग, इसको लोहे के लगाने से लोहा सोना होजाता है।

मणि व उपमणि नाम।

१ पद्मराग अर्थात् मानक अशुद्ध नाम संगसिगलो (स्यामका मानक) तामडा १

२ मुक्ता (मोती) नरम निमरू १ सीप २ संख।

३ प्रवाल (मूंगा) १ साख मूंगे को १ संग मूंगी २ जड़ मूंगे को।

४ मरकत (पन्ना) १ तोड़ा १ संग मरगज २ संग पन्नी २ संग पीत मानक।

५ पुष्पराग (पुखराग) १ सोनैला २ कहरवा कपूर
३ सोना मक्खी ।

६ वज्र (हीरा) १ कांसला २ दतल ३ तिरमूली
(वज्रकान्त) १ कुरूंज २ संग सिमाक ।

७ इन्द्र नील (नीला) १ नीलो:—१ जमुनिया २ कठैल ।

८ मेदक (गोमेढक) १ तुरसावा १ संग साफो ।

९ फिरोजा १ फिरोजो २ दाने फिरंग ।

१० सूर्यमणि (लुलाडी) १ टोपस १ संग आतशी
१ सिंदूरिया ।

११ चन्द्रमणि (सफेद पुखराग) १ सफेद नरम १संग गौरी ।

१२ लसनिया १ नयालसुनिया १ गौदन्ता १ गौदन्ती ।

१३ घृत मणि (जबरजद्द) १ हरीतिमुलि १ संग पिस्तई
२ धुनैला ।

१४ तैल्य मणि १ संग पितरीया १ संग गुदडो ।

१५ भीष्म मणि (अमृत मणि) १ संग बदनो १ संग
सेलखड़ी २ संग कचिया २ संग जराहत ।

१६ ऊपलक (ओपल) १ संग अजूबा १ संग अबरी ।

१७ स्फटिक मणि (फटिका) बिल्लौर १ संग दूधिया ।

१८ पारस मणि १ संग चुम्बक १ संग देडी २ संग कसौटी १ संग चकमक।

१९ उलूक मणि १ संग बसरो १ संग वांसो।

२० वर्तक (लाजवर्त) संग बादल १ संग मूसा।

२१ एसन मणि १ संग हकीक १ संग हदीद।

२२ परख " (संग ईसब) १ संग मखर १ संग मूसा।

मोहराओं के नाम।

१ सूर्यमुखी २ चन्द्रमुखी ३ मंगलमुखी ४ मोहिनी ५ त्रिवेनो ६ जगजोत ७ शिव सुलेमानो ८ विग्रही ९ गौरी-शंकर मोहरा १० लहरो मोहरा ११ जल तारन मोहरा १२ अग्निशोषन मोहरा १३ खलास मोहरा १४ नजर मोहरा १५ अलेमानो मोहरा १६ सुलेमानो मोहरा १७ मारू मोहरा १८ रतजरो मोहरा १९ जहर मोहरा २० नक्षत्री (संगे सितारा) मोहरा २१ संखिया मोहरा २२ पाय जहर मोहरा २३ सर्प मोहरा २४ मोर मोहरा २५ वच्छनागो मोहरा २६ सिंधो मोहरा २७ सूंठिया मोहरा २८ हलदोया मोहरा २९ जवाहर मोहरा।

नवग्रह रत्नों के नाम ।

संस्कृत	हिन्दी	गुजराती	मराठी	तिलंगी	अरबी फ़ारसी	करनाटकी	अंग्रेज़ी लाटीन
१ रविरत्न, पद्मराग	माणक	माणयक चुन्नी	मानिक	माणिक्यम्	याक़ूत सुर्ख़	मानक	Ruby (E) Rubinus (L)
२ चन्द्ररत्न मौक्तिकम्	मोती	मोती	मोती	मोत्यालु	लू लू, मरवारीद	मोतिक	Pearl (E) Margarita (L)
३ भौम रत्न प्रवाल विद्रुम	मूंगा	परवाला	पोवले	प्रवालकम्, पागडालू	मिरजॉन	अवलेहवत्	Coral (E) Corallium Rubum(L)
४ बुधरत्न मरकत हरिणमणि	पन्ना	लीलूपांनू	पांच रतन	नील	जमूर्द	पाची पच्चे	Emerald (E) Smaragdus (L)

संस्कृत	हिन्दी	गुजराती	मराठी	तिलंगी	अरबी फ़ारसी	करनाटकी	अंग्रेज़ी लाटीन
५ गुरुरत्न पुष्पराग	पुखराज	पीलूरतन	पुष्कराज	पुष्पराग	याक़ूत ज़र्द	पुष्पराग	Yellow Sapphire (E)
६ भृगुरत्न, वज्र	हीरा	हीरो	हीरा	वज्रम्	अलमास	वज्रम्	Diamond (E) Pure carbon Adams (L)
७ शनिरत्न इन्द्रनील	नीलम	कालूनग	नीलमणि	नील	याक़ूतसब्ज़	नील	Sapphire (E) Sapphirus (L)
८ राहुरत्न मेदक	गोमेदक	गोमेदक, गोमूत्रजेवुं	गोमेदमणि	गोमेदकम्		गोमेदक	Zarcone (E) Onyx (L)
९ केतुरत्न वैडूर्यसूत्र मणि	लसु-निया	लसुनिया	वैडूर्यम्	”			Cats eye (E)

सूर्य रत्न मानक विधान ।

यह लाल रंग का होता है, और हीरे को छोड़कर सबसे कड़ा पत्थर होता है रसायनिक विश्लेषण द्वारा मानक में दो भाग अलूमिनम और तीन भाग आक्सिजन का पाया जाता है जिससे रसायन शास्त्रियों के मत से यह कुरंड की जाति का पत्थर प्रतीत होता है। इसमें एक और विशेषता है कि बहुत अधिक ताप से या सुहागे के योग से यह कांच की भांति गल जाता है, और गलने पर इसमें कोई रंग नही रह जाता; आजकल के रसायनिकों ने कांच से नकली मानक बनाया है जो असली मानक से बहुत कुछ मिलता जुलता होता है। मानक पत्थर गहरे लाल रंग से लेकर गुलाबी रंग और नारंगी से लेकर बैंगनी रंग तक का मिलता है; मानक की दो प्रधान जातियां है— नरम चुन्नी और मानक नरम चुन्नी का विश्लेषण करने से मैग्नेशियम, अल्यूमिनम और आक्सिजन मिलते हैं, उन पर यदि मानक से रगड़ा जाय तो लकीर पड़ जाती है। अगस्त ऋषि के सिद्धान्त से मानक के तीन

भेद हैं पद्मराग, कुरुविंद और सौगंधिक ! कमल पुष्प के समान रंग वाला पद्मराग कहलाता है, गाढ़ रक्त वर्ण कुछ नील वर्ण वाला सौगंधिक, और टेसू के पुष्प सम रंग वाले को कुरुविंद कहते हैं। सिंहल द्वीप में पद्मराग, कालपुर और आंध्र से कुरुविंद और तुर्क में सौगन्धिक उत्पन्न होता है। मतान्तर से नील गंधिक नामक एक और जाति का मानक होता है। नीलापन लिए रक्त वर्ण या लाखी रंग का माना गया है इसकी खान वर्मा, श्याम, लंका, मध्यएशिया, यूरुप और आस्ट्रेलिया आदि अनेक भू भागों में पाई जाती हैं। जिस मानक में चिन्ह नहीं होते और चमक अधिक होती है वह उत्तम माना जाता और अधिक मूल्यवान होता है। वैद्यक में मानक को मधुर, स्निग्ध और वात पित्त नाशक लिखा है।

पद्मराग का स्वामी (अधिष्ठाता) सूर्य होता है, रक्त कमल के समान रंग होता है जिस समय सूर्य की महा दशा हो या अन्तर दशा हो उस समय इस पद्मराग मणि की अंगूठी बनवाकर पहनने से बहुत लाभ होता है

किन्तु मानक दोष सहित हो तो कभी भी ग्रहण नहीं करना चाहिये। बग़ैर चमक वाला मानक शून्य कहलाता है पहिनने से भाई को दुःख होता है दूध के समान रंग हो तो पशु का नाश करता है, एक साथ दो रंग जिसमें हों तो पिता माता को दुःख साथ हो स्वयम् को दुःख देने वाला हो। जठर से घिरा हुआ हो तो क्लेश करे, धन व घर तक का नष्ट करने वाला है। (धूम्) धूंवे के समान रंग हो तो अनायास ही बिजली का भय होता है। पत्ती के पाद सम चिरा हुआ हो तो संग्राम में शस्त्र नष्ट और कलङ्क को लगाने वाला हो। मटमैला रंग हो तो (उदर विकार) पेट पीड़ा और सन्तान को नष्ट करने वाला हो। काले रंग के छींटे हों तो बहुत दुःख का देने वाला, सफेद छींटे वाला अपयश का देने वाला होता है। मधु सम छींटे हों तो धन सुख और आयु का हरण करने वाला होता है। मानक का रंग टेसू के पुष्प सम, गूंजे के सम, कुमकुम् सम, अनार के बीज सम, सिंगरफ सम, कोयल के नेत्र सम और चिड़िया के चोंच सम हो चमक बहुत हो

तो वह मानक अतीव लाभदायक सूर्यदेव को शान्त करने वाला होता है।

चन्द्र रत्न मोती विधान

मोती—संज्ञा पु० एक प्रसिद्ध बहुमूल्य रत्न जो छिछले समुद्रों में अथवा रेतीले तटों के पास सीपी में से निकलता है।

समुद्र में अनेक प्रकार के ऐसे छोटे छोटे जीव होते हैं, जो अपने ऊपर एक प्रकार का आवरण बनाकर रहते हैं, इस आवरण को प्रायः सीप और उन जीवों को सीपी कहते हैं, कभी २ ऐसा होता है कि बालू के कणके में से बहुत छोटा कोई जीव सीप में प्रवेश कर जाता है, जिसके कारण सीपी के शरीर में एक प्रकार का प्रदाह उत्पन्न होने लगता है उस प्रदाह के शान्त करने के लिये सीपी अनेक प्रयत्न करती है, पर जब उसे सफलता नहीं होती तब वह अपने शरीर में से एक प्रकार का सफेद चिकना और लसीला पदार्थ निकालकर बालू के उस कण अथवा जीव को चारों ओर से ढकने

लगती है, जो अन्त में मोती का रूप धारण कर लेता है। तात्पर्य यह है कि मोती की पैदायश किसी स्वाभाविक प्रक्रिया के अनुसार नहीं होती, बल्कि एक अस्वाभाविक रूप मे होती है, इसीलिये बहुत दिनों तक लोग यह समझते थे कि मोती की उत्पत्ति सीपी में किसी प्रकार का रोग होने से होती है। प्राचीन काल मे यह माना जाता था कि स्वाती की वर्षा के समय सीपी मुंह खोलकर समुद्र के ऊपर आ जाया करती है, और जब स्वाती की विन्दू उसमें पड़ती है तब मोती उत्पन्न होता है।

साधारण मोती सुडौल और गोल होता है, पर कुछ लम्बे टेढ़े मेढ़े भी होते है, मोती का रंग मटमैला, धूमला, काला या कुछ हरापन अथवा नीलापन लिये हुए होता है, पर साफ़ करने पर वह खूब सफेद हो जाता है और उसमें एक विशेष प्रकार की "आब" या चमक आ जाती है। मोती जितना बड़ा या सुडौल होता है उतना ही अच्छा होता है। मोती संसार के अनेक भागों में पाये जाते हैं, किन्तु लंका व फारिस की खाड़ी

तथा पश्चिमी आस्ट्रेलिया के मोती बहुत अच्छे होते हैं, इसके अतिरिक्त पनामा के पीले मोती तथा केलिफोर्निया की खाड़ी के काले और भूरे मोती भी बहुत अच्छे होते हैं, मोती प्रायः तौल के हिसाब से बिकते हैं, किन्तु अन्यान्य रत्नों की भांति मोती की दर भी उसके भार की वृद्धि के अनुसार बहुत बढ़ती जाती है। उदाहरणार्थ, यदि एक चौके मोती का मूल्य ५०) होगा तो उसी प्रकार के दो चौके मोती २००) और पांच चौके मोती का मूल्य १२५०) या इससे भी अधिक होजायगा।

भारत वर्ष में मोती का व्यवहार बहुत प्राचीन काल से चला आता है, धनी लोग इसकी प्रायः मालाएँ बनवाते हैं, और इन्हें अंगूठियों तथा दूसरे आभूषणों में जड़वाते है। इसका व्यवहार वैद्यक में औषधि रूप में भी होता है, और प्रायः वैद्य लोग इसका भस्म तैयार करते हैं वैद्यक में मोती को शीत वीर्य, शुक्र वर्धक, आंखों के लिये हितकारी और शरीर को पुष्ट करने वाला माना है। हमारे यहां के प्राचीन ग्रंथों में यहभी कहा गया है कि सीपी और शंख आदि के

अतिरिक्त हाथी, सर्प, मछली, मेंढ़क, सूअर, बांस, और बादल तक मे मोती होते हैं, और इनको प्राप्त करने वाला बहुत सौभाग्यशाली कहागया है, इन सब मोतियों के अलग २ गुणभी बतलाये गये हैं, ऐसे मोती कभी किसी के देखने में नहीं आते ।

आठ प्रकार के मोती संसार में होते है इनमें से केवल सीपी के मोती को वेधना ग्रन्थों में कहा है और सात प्रकार के मोतीयों का वेधना मना है ।

१ आकाश में जो मोती पैदा होता है वह अति सुन्दर स्वच्छ बिजली सम ज्योति होती है उसकी ज्योति को नेत्र नहीं देख सकते हैं ऐसा मोती सब आशाओं को पूर्ण करता है ।

२ सर्प तक्षक के फण में उत्पन्न मोती होता है, लीली छाया उज्वल गोले सम कान्ति जिसकी चन्द्रमा के समान होती है यह मोती यदि किसी के पास हों तो अवश्य मेव संसार के सुखों का भोक्ता होता है ।

३ बांस में पैदा होने वाला मोती हरे रंग का बेर के समान गोल, कोमल, और सूर्य के उदय होते ही

प्रकाश को करता है, ऐसा मोती हो तो अमूल्य धनराशि को प्राप्त कराता है।

४ सूकर यानी वाराह के कुल में उत्पन्न होता है, सम्पूर्ण जगह में नहीं होता, किन्तु जहां अधिकता से दुर्गन्धि होती हो उन सूकरों (सूअर) की नाभि में पैदा होते है, सरसों के समान रंग पीला (भट कटैया) कठैल सम सुन्दर गोल होता है। इसको स्त्री पुरुष अपने कटि भाग में धारण करले तो वन्ध्या स्त्री के भी गर्भ रह जाता है और अनेक प्रकार का आनन्द प्राप्त करता है।

५ ऐरावत हाथी के वंश में जो हाथी हैं, उस हाथी के कपोल कंठ से यह मोती पैदा होता है, कान्ति मंद और आंवले के समान गोल होता है, इसकी माला पहनने से कंठमाल फोड़े फुन्सी वग़ैरह चर्म रोगों को नष्ट करने वाला होता है।

६ पाञ्चजन्य शङ्ख के सन्तान के कुल में यह मोती उत्पन्न होता है, पांडु और अंडे के समान रंग, चिकना, सुन्दर घाट और सुगोल होता है। इसको एक दफे

पहनने मात्र से ही जगत् की सम्पत्ति प्राप्त कर लेता है ।

७ मगर मच्छ से यह मोती होता है, हरी गूंगची सम प्रमाण, पांडु सम रंग, कान्ति (द्यूति) बहुत अच्छी और कोमल होता है। इस मोती को पानी के सम्मुख रखदे तो जल की जितनी भी वस्तु हैं वह सब देख पड़ती हैं ।

८ सीप से मोती पैदा होता है, वायु से बादल धूम् वर्ण के होकर वर्षा सागर में होती है, उस समय ऋतु पाकर स्वाती नक्षत्र आता है उस समय वह बिन्दु उसके मुख में गिरती है, समय पाकर उसके मुख से मोती निकलता है यह मोती भी चमकदार, सुडौल और सुन्दर होता है, इसके पहनने से आंखों की बीमारी व सब प्रकार के मुख के रोग नष्ट होते हैं ।

मुक्ता दोष ।

टूटा हुआ मोती हो तो दुःख दाता और अङ्ग में शस्त्र का लगवाने वाला होता है ।

बारीक लहर सहित रेखा हो तो मन को उद्वेग व चञ्चल करता है।

चारों तरफ गड़ी हुई रेखा हो तो हृदय में भय व कष्ट पैदा करता है।

सोती में मसा लाल हो तो रक्त की धारा बहाता है, यदि काला मसा हो तो दिल को दुखी करता है।

रूखा और चमक रहित शून्य हो तो वैभव का हरण करने वाला व दारिद्र को बढ़ाने वाला होता है। चेचक के समान दाग व खड्डे हों तो कुल हानि और सन्तति का नष्ट करने वाला होता है। छाले के समान पोले बीच में हो तों सुख सौभाग्य और सम्पदा हरण करने वाला हो। चिपटा पेड व घटा हुआ हो तो अनायास ही बदनामी उत्पन्न करता है।

धब्बे के साथ राशी हो तो शत्रु व रोग अंग में पैदा करता है।

ताम्र सुर्ख व काली छाया हो तो बन्धुओं का नाश करता है।

बहुत ज्यादा मूंगा के समान लाल हो तो दुःख रोग व मृत्यु को लाता है।

ऐसे दोष सहित जो मुक्ता हो तो कभी भी धारण नहीं करना चाहिये, दोष रहित मुक्ता शुद्ध लग्न व शुभ दिन चन्द्रमा की दशा में धारण करने से सदा उसे सब तरह का लाभ होता है। सफेद मुक्ता विप्र पीला वैश्य व शूद्र काले रंग का पहन ने से अन धन व आनन्द को देने-वाला होता है।

भौम रत्न मूंगा विधान।

मूगा संज्ञा पु० समुद्र में रहने वाले एक प्रकार के कृमियोंके समूह-पिंडकी लाल ठठरी जिसकी गुरिया बनाकर पहनते है, इसकी गिनती रत्नों में कीजाती है।

विशेष—समुद्र तलमें एक प्रकार के कृमि खोलडी की तरह का घर बनाकर एक दूसरे से लगे हुये जमते चले जाते है। ये कृमि अचर जीवों में से है ज्यों ज्यों इनकी वंश वृद्धि होती जाती है, त्यों त्यों इनका समूह—पिंड थूअर के पेड़ के आकार मे बढ़ता जाता है, सुमाट्रा और जावा के आस पास प्रशांत महासागर में समुद्र के तल में

ऐसे समूह–पिंड़ हजारों मील तक खडे मिलते हैं इनके समूह एक दूसरे के ऊपर पटते चले जाते हैं। जिससे समुद्र की सतह पर एक खासा टापू निकल आता है, ऐसे टापू प्रशांत महा सागर में बहुत से हैं जो प्रथल द्वीप कहलाते हैं मूंगा की केवल गुरियाही नहीं बनती, छडी, कुरसी आदि वड़ी २ चीजें भी बनती हैं। आभूषण के रूपमें मूंगे का व्यवहार भी मोती के समान बहुत दिनों से है। मोती और मूंगे को प्रायः साथ २ लिया जाता है, रत्न परीक्षा की पुस्तकों में मूंगे काभी वर्णन रहता है साधारणतः मूंगेका दाना जितना हो वड़ा होता है, उतना अधिक उसका मूल्य भी होता है, कवि लोग बहुत पुराने समय से होठों की ओपमा मूंगे से देते आये हैं। मूंगे का स्वामी भौम है जिस समय भौम (मंगल) की दशा हो उस समय इसको अंगूठी या माला पहननी चाहिये जिससे भौम ग्रहकी शांति हो। सेंदूर सम रंग वाला विप्र (ब्राह्मण), हिंगुल सिंगरफ के सम रंग वाला क्षत्रिय, गेरु के ढेरसम रंग वाला वैश्य कृमि सम रंग वाला शूद्र को पहनना चाहिये।

मूंगा दोष।

दो रंग वाला, खड्डे वाला धब्बे और श्वेत वर्ण वाला हो तो अंग का भंग करने वाला सुख सम्पत्ति का हरण करने वाला होता है। धब्बे सहित काले वर्ण वाला हो तो मृत्यु सम कष्ट देता है। दोष सहित श्वेत वर्ण हो तो चोरी से सम्पत्ति को नष्ट कराता है। छींटे वाला हो तो अनेक रोगों को बढ़ाता है। घुना हुआ हो तो अंग में और मस्तक में दर्द पैदा करता है। चीरा वीच में लगा हुआ हो तो शस्त्र से घात कराता है। इसलिये चिकना, चमकदार, घाट जिसका शुभ हो वह हृदय को शान्ति सुख और सम्पत्ति का देने वाला होता है। वैद्यक में इसके खाने से पुष्ट अंग का बनाने वाला कफ, खांसी और मंदाग्नि दूर करने वाला कहा है।

बुध रत्न विधान।

पिरोज जाति हरे रंग का यह रत्न प्रायः स्टेमट और ग्रेनाइट की खानों से निकलता है।

मरकत—जमुर्रद नाम से विख्यात है, क्रोनियम नामक एक रंगवर्धक तत्त्व के कारण अन्य सजातोय को अपेक्षा इसका रंग अधिक गहरा और नेत्राकर्षक होता हैं, जो पन्ना जितना हो गहरा और आभा युक्त होता है वह उतना ही मूल्यवान् समझा जाता है। भूरे अथवा पोलापन या (श्यामता) कालापन लिये हुवे टुकड़े अल्प मूल्य के समझे जाते हैं। सर्वोत्तम पन्ना दक्षिण अमेरिका का कालंबिया रियासत को खानों से भी प्राचोन समय से निकलता है। भारतवासी प्राचीन रीत्यानुसार मरकत भो कहते हैं। पन्ने का स्वामी बुध है जो सोने के साथ पन्ना निकलता है वह निर्दोषो व उत्तम कहलाता है। सिरोप पुष्प सम, कुमोदिनी तोते के रंग सम, गरुड जैसा, भांग, नीम, वबूर, पति वेल, घास, सुन्दर स्वच्छ जल सम रंग वाला, चिकना साफ सुघाट हरे रंग वाला बुधकी दशा या कन्या पर चन्द्र और बुध आवे तब अच्छी घडी में अंगूठी या चोकी वनाकर पहनने से अन धन सुख सम्पत्ति को करता है, व

सर्प, भूत, मिरगी, गम, पागलपन, दुःख और नजर आदि भी नष्ट होते हैं।

पन्ना दोष

जाले जिसमें जादा हो तो मनको अभिलाषा भी नष्ट करदेता है।

अभरक के सम—चमक व धुन्ध हो तो नेत्र पीडा व हरण करने वाला होता है।

रेखायें हों चीरे हों तों घरमें कलह पैदा करता है। दो रंग वाला सुख सम्पत्ति को नष्ट करता है इस लिये शुभ प्रभा युक्त चिकना हरे रंग वाला पन्ना धारण करना चाहिये।

वैद्यकमें शीतल मधुर संयुक्त, रुचिकारक पुष्टिकर, वीर्य्य वर्द्धक आम्ल पित्त, ज्वर, वमन, श्वास, मंदाग्नि, बवासीर, पांडु रोग और विशेष रूपसे विष का नाश करने वाला माना जाता है।

बृहस्पति रत्न विधान।

पुखराज संज्ञा पु० एक प्रकार का रत्न या बहु-मूल्य पत्थर जो प्रायः पीला होता है पर कभी कभी

कुछ हलका नीलापन या हरापन लिये भी होता है। यह अलुमिनियम का एक प्रकार से सैकत छार है, यह हीरे से भारी पर कम कड़ा होता है। पुखराज अधिकतर ग्रेनाइट की चट्टानों और कभी कभी ज्वाला-मुखी पर्वतों के दरारों में मिलता है। कार्नवाल (इङ्गलैंड), स्काटलैंड, ब्राजील, मैकसीको, साइबेरिया और अमेरिका के संयुक्त राज्य में पाया जाता है। एशिया के यूराल पर्वत से भी बहुत निकलता है, ब्राजील के गहरे पीले रंग का पुखराज सब से अच्छा माना जाता है। सूर्य उदय होने के समय की छाया के सम, कुन्दन सम, स्वर्ण मेरु पर्वत सम, गुलदाउदी सम, हारसिंगार, पलास, कुसुम, गेंदा, केशर, गोरोचन, हलदी, नीबू और कमरख सम रंग का पुखराज होता है। यह चिकना, निर्मल और जिसमें पानी चमकदार हो ज़र्द रंग, घाट जिसका शुभ हो तो वह पुखराज अतीव लाभदायक होता है, इसका स्वामी वृहस्पति है, वृहस्पति की दशा में धारण करने से सदा लाभ देने वाला होता है। सफेद ज़र्द के साथ खूब ज़रदी हो तो

क्षत्रिय, कालापन लिये ज़र्द हो तो शूद्र, ज़र्द के साथ ज़र्द हो तो वैश्य, सफेद के साथ ज़र्द हो तो ब्राह्मण को पहनना चाहिये ।

पुखराज दोष ।

बीच में चिरा हो तो चोर का भय देने वाला हो, शून्य हो तो बन्धुओं के साथ विद्रोह हो । अबरख के सम रङ्ग हो तो रोग पैदा करने वाला, जाला सहित हो तो पेट पीड़ा, दूध के सम रङ्ग वाला हो तो शरीर को चोट पहुँचाने वाला, दो रङ्ग वाला कुल मे कलह का बढ़ाने वाला, जिसके काला विन्दु हो तो मृत्युधाम को पहुंचाने वाला, सफेद बिन्दु पशु की मृत्यु चाहने वाला और मधु सम बिन्दु हो तो धन धान्य का नाश करने वाला होता है, अधिक दोष वाला तो अति अवगुण का करने वाला होता है इसलिये शुभ चमकदार धारण करने से अन, धन, बुद्धि, बल, सम्पत्ति, आयु और यश को करता है, भूत, प्रेत आदि बाधाओं को नष्ट करता है, सदा सुखमय जीवन रहता है ।

वेद्यक में इसके अनुपान से पोलिया, आमवात, ताप, तिल्ली, कफ, खांसी, पाचनशक्ति, नकसीर, मुख-दुर्गन्धि, त्रिदोष, दमा और बल वीर्य को बढ़ाने वाला कहा है।

शुक्र रत्न विधान।

हीरा—संज्ञा पु० इसका बहुमूल्य पत्थर जो अपनी चमक और कड़ाई के लिये प्रसिद्ध है।

विशेष—आधुनिक रसायन शास्त्र के अनुसार हीरा कोयले का ही विशेष रूप है, जो प्राकृतिक दशा में पाया जाता है, यह संसार के सब पदार्थों से कड़ा होता है, इसी से कवि लोग कठोरता के उदाहरण के लिये इसका नाम लाया करते हैं, जैसे तुलसीदास जी ने कहा है—"सिरिस सुमन किमि वेधे हीरा" यह अधिकतर तो सफेद अर्थात् बिना रंग का होता है, परन्तु पीले, हरे, नीले और कभी कभी काले हीरे भी मिल जाते हैं। यह रत्न सबसे बहुमूल्य माना जाता है, और भिन्न भिन्न रंगों की आभा या छाया देता है। रत्न परीक्षक ग्रन्थों मे हीरे की पांच छायाएं कही हैं—लाल, पीली, काली, हरी और

श्वेत, व्यवहार के लिये हीरा कई रूपों में काटा जाता है जिससे प्रकाश छोड़ने के पहलों के बढ जाने से इसकी आभा बढ़ जाती है, इसके पहल काटने में भी बड़ी तारीफ़ है। अठपहल, छकोना लघु, उज्वल और नुकीला होना मुख्य दोष है—मल दोष यदि बीच में (मैल) दिखाई दे तो बहुत अशुभ कहा गया है। आजकल हीरा दक्षिण अफ्रीका में बहुत पाया जाता है, भारतवर्ष की खान अब प्रायः खाली हो गई है। पन्ना कुछ स्थानों से अब भी निकलता है किसी समय दक्षिण भारत हीरे के लिये प्रसिद्ध था, जगत्प्रसिद्ध "कोहेनूर" नामक हीरा गोल कुंड की खान का कहा जाता है। दही, चांदी, स्फटिक, दामिनी, शशि, हंस, अनार, गुलाब, कमल, शरद्जल, सब्ज और कुमोदिनी सम रंग का हीरा बहुत अच्छा बढ़िया गिना जाता है, इसका स्वामी शुक्र है इसकी दशा में अंगूठी या चौकी धारण करने से सुख सम्पत्ति अन धन सम्पूर्ण आनन्द देने वाला होता है। क्षत्रिय वैश्य ब्राह्मण और शूद्र अपने २ वर्ण का पहनना चाहिये।

हीरा दोष ।

रक्त वर्ण वाला हीरा हो तो हाथी घोड़ा आदि पशुओं का नाश करता है ।

पीत वर्ण का हो तो वंश का नाश, काले वर्ण का हो तो सुख सम्पत्ति का नष्ट करने वाला होता है। अबरख रंग सहित तारे वाला बहुत दुःख, पोल व छाल वाला हो तो शरीर की शक्ति को नष्ट करने वाला होता है । गढ़ा हो तो अङ्ग में रोग, लाल रंग सहित धब्बे हों तो धन, यश और पुत्र का नाश करने वाला होता है । शून्य गुणहीन व चमकदार न हो तो शून्य अङ्ग वाला व विघ्न उद्वेग का करने वाला होता है । रक्त बिन्दु हो तो शीघ्र ही नाश करने वाला, सफेद बिन्दु हो तो दुख का देने वाला होता है। रक्त वर्ण सहित मधु बिन्दु हो तो रोग का लाने वाला, काला बिन्दु आयु का हरण करने वाला होता है । आड़ी खड़ी रेखायें हों तो यमपुर जाने की पहचान है, तिरछी रेखा नारी को दुख देने वाली, मत्स्य चक्र रेखा सुख की

हरण करने वाली होती हैं। गिरद्दा, कुतन्नी, अठवाँस, पट्वाँस, त्रिकोण और पान सम घाट, और सफेद उज्वल वर्ण का हीरा अतीव लाभदायक होता है।

वैद्यक में भी इसकी भस्म बनवाके पाव रत्ती पन्द्रह दिन तक खाने से अग्निदीप्त, वीर्यपुष्ट, संग्रहणी, अतिसार, बवासीर, ज्वर, कफ, वात, मिरगी, हौल दिल, अजीर्ण, लकवा, खुश्की, सर्दी और पेट के सम्पूर्ण रोगों को नष्ट करके कञ्चन वर्ण का शरीर बना देता है।

शनिश्चर रत्न विधान।

नीलमणि (नीलम) संज्ञा पु० नीले रंग का रत्न होता है।

विशेष—नीलम वास्तव में एक प्रकार की कुरंड है जिसका नम्बर कड़ाई में हीरे से दूसरा है, जो बहुत अच्छा होता है इसका मूल्य भी हीरे से कम नहीं होता, नीलम हल्के नीले से लेकर गहरे नीले रंग तक का होता है। काश्मीर (बसकर) की खानें भी अब प्रायः खाली हो चली हैं। बर्मा में माणक के साथ नीलम भी

निकलता है, सिहल द्वीप से भी बहुत अच्छा नीलम आता है।

रत्न परीक्षा सम्बन्धी पुस्तकों में माणिक के समान नीलम भी तीन प्रकार का कहा गया है। उतार, महा-नील और साधारण। महानील के सम्बन्ध में लिखा है कि यदि सौ गुने दूध में रख दिया जाय सारा दूध नीला दिखाई देने लगेगा। सबसे उत्तम इन्द्रनील वह है जिसमे इन्द्र धनुष सी आभा निकले। परन्तु ऐसा नीलम जल्दी नहीं मिलता है। नीलम में पाँच बातें देखी जाती है, गुरुत्व, स्निग्धत्व, वर्णाढ्यत्व, पार्श्ववर्त्तित्व और रजकत्व। जिसमें स्निग्धत्व होता है उसमें चिकनाई छूटती है। जिसमें वर्णाढ्यत्व होता है उसे प्रातःकाल सूर्य के सामने रखने से उसमें नीली शिखा सी फूटती दिखाई पड़ती है, पार्श्ववर्त्तित्व गुण उस नीलम में माना जाता है जिसमे कहीं २ पर सोना, चाँदी, स्फटिक आदि दिखाई पड़े। जिसे जलपात्र आदि में रखने से सारा पात्र नीला दिखाई पड़ने लगे उसे रजकत्व सम-झना चाहिये। महानद, कलिंग, सैलान, श्याम, वर्मा

आदि में यह पैदा होता है । इसका स्वामी शनिश्चर है शनिश्चर की दशा में इसके धारण करने से अतीव लाभदायक होता है ।

नीला दोष ।

सब्ज़ रंग का ऐब हो तो स्त्री को दुःख देने वाला, अबरख सम हो तो सुख का हरण करने वाला होता है । सफेद डोरिया पड़ा हुआ हो तो चोट नेत्र को दुख देने वाला होता है । दूध के समान यदि रंग हो तो दारिद्रता व चोरे हों, टूटा हुआ हो तो अंग में शस्त्र का घाव पैदा करता है । दो रंग वाला शत्रु का बढ़ाने वाला, जाला पड़ा हुआ हो तो अंग मे रोग बढ़ाने वाला होता है । खड्डे वाला हो तो विष स्फोटक रोग, शून्य व गुम हो तो प्रिय बन्धुओं का नाश कराने वाला होता है । निर्दोषी, चिकना, चमक, शुद्ध घाट, मोर कंठ सम रंग, अलसी के फूल के समान रंग हो तो अच्छा होता है । सफेद आभा युक्त हो तो ब्राह्मण, पाटल (गुलाबी) रंग वाला क्षत्रिय, पीत वर्ण वाला

वैश्य, काले वर्ण वाला शूद्र को पहनना चाहिये । शुभ लग्न शुभ घड़ी में ऐसा नीला पहनने से बहुत लाभदायक होता है ।

वैद्यकमें इसको कूट पीस छान कर केवड़ा जल में घुटवाकर इकीस दिन खुब हल कराके छाया में सुखाकर मासाभर मात्रा चालीस दिन तक खाने से जलन, नेत्र को धुंधरी, मगजकी, शक्ति, आतशक, खुश्की, हिचकी, दस्त, खून, मुख में का खून, आदि बीमारीयों को नष्ट करता है । और शरीरको पुष्ट बनाकर निरोग बनादेता है ।

राहु रत्न विधान

गोमेदक संज्ञा पु० एक प्रसिद्ध मणि जिसकी गणना नव रत्नों में होती है, इसका रंग सुर्खी लिये हुए पीला होता है—और हिमालय पर्वत तथा सिन्धु नदी में पाया जाता है, जो दोष हीरे में होते हैं वही इसमें भी होते हैं सुश्रुत के सिद्धान्त से इससे मन्दाजल साफ होजाता है । चीन, ब्रह्मा और अरब आदि देशोंमें सिंधु सरस्वती के किनारे यह उत्पन्न होता है । इसका स्वामी राहु होता

है, राहुको दशा में साफ, चमकदार, कोमल, चिकना, शुद्ध घाट, शुभ पीले वर्ण वाला गोमेदक पहनने से इस ग्रहको शान्त करता है। सफेद आभा युक्त हो तो ब्राह्मण, रक्त वर्ण का हो तो क्षत्रिय, पीत वर्ण का रंग हो तो वैश्य, काला वर्ण हो तो शुद्रको पहनना चाहिये। सुन्दर गोमेदक अङ्ग में धारण करने से राहु ग्रह यदि नोच लग्नमें पडा हो तो इससे बडा लाभ होता है।

गोमेदक दोष

जाला सहित चकत्ते हों तो अंगका भंग करने वाला, अबरख के सम रंग हो तो धन का नाश करता है। रूखा हो गढा हो तो मान को भ्रष्ट करने वाला होता है। चोरें हों रक्त वर्ण हो तो अंगमें दोष पैदा करता है। धब्बे हों तो अपना देश छुडाता है। दो रंग वाला हो और काला बिन्दु हो तो पिता कष्ट व स्त्री का दुःख करता है। रक्त बिन्दु हो व श्वेत बिन्दु हो तो लडके का दुःख या भय उत्पन्न करता है। शून्य व शुम हो तो शून्य बुद्धि का करने वाला व अंग का नष्ट भ्रष्ट करने वाला होता है।

इसलिये अच्छा कोमल, चिकना, शुद्ध घाट और शुभ रंग वाला ही लाभ देता है। वैद्यक में इसको गुलाब जलमें तेराह दिवस घुटाकर धूपमें सुकाकर काचके पात्रमें भरके रत्ती भर पैंतालीस दिन खाने से वायसूल, कृमिरोग नसवाय, नकसोर, दुर्गन्धि, कफ, ज्वर, गर्मी, खुश्की हिचकी, पित्त, तिल्ली, आमवाद, फिया, कमल वायु, और संग्रहणी आदि को नष्ट करता है।

केतु रत्न विधान।

लहसुनिया संज्ञा पु० धुमिल रंग का एक रत्न या बहुमूल्य पत्थर–रुद्राक्षक।

विशेष—यह नव रत्नों में हैं तथा लाल, पीले और हरे रंग का भी होता है। जिस पर तीन अर्द्ध रेखाएँ हों वह उत्तम समझा जाता है और ढाई सूत का कहलाता है। इसकी गणना महारत्नों में है, सुतार, घन, अद्रक्ष, कलिल और रंग ये पाँच इसके गुण और कर्कर, कर्कश, मास कलंक और देह ये पांच इसके दोष कहे गये हैं। कुछ लोगों का सिद्धान्त है कि यह रत्न सिंदूर

पर्वत पर होता है, इसी से इसको वैडूर्य भी कहते हैं। इस रत्न का स्वामी केतु है और कहा गया है कि जब केतु की दशा हो या बिगड़ा हुआ हो, खराब हो तो यह रत्न धारण करना चाहिये। शुक की पूंछ सम, स्वर्ण चिड़ी सम, अंडे के सम, मयूर पंख के चंदवे सम और कछुए के रंग सम, चिकना, चमक, सुघाट, जनेऊ के सम सूत्र रेखा, ऐसा रत्न हो तो धारण करने योग्य है। बाँस के मध्य में जो रंग हो वह ब्राह्मण, नीलकंठ के समान क्षत्रिय, शुक की पूंछ के समान वैश्य हाथी के चर्म अंग के समान शूद्र को शुभ लग्न व शुभ घड़ी में पहनना चाहिये।

लहसुनिया दोष।

धब्बे हों तो शत्रुता बढ़ाने वाला हो, गढ़ा हो तो उदर रोग पैदा हो, डोरा भीतर हो तो नेत्रों में रोग, चीरा हो तो चोट लगे, शून्य दोष सहित हो तो अङ्ग को शून्य करने वाला व दुःख देने वाला होता है। रक्त दोष हो तो क्लेश का बढ़ाने वाला होता है।

रक्त विन्दु हो तो लड़के का दुःख हो, मधु मम विन्दु हो तो स्त्री का दुःख करता है। श्वेत विन्दु हो तो भाईयों को दुःख का देने वाला, काला विन्दु हो तो प्राणों को हरण करने वाला होता है, इसलिये जैसा ऊपर बतला आये है उसी माफ़िक शुभ रत्न धारण करने योग्य है। वैद्यक मे इसकी विधि ऐसे बतलाई है कि इसको खूब कूट, पीस, छानकर केवड़े जल मे सात दिन घुटवाकर काच के पात्र में सुखा कर रखले और माशाभर दोनों समय खाने से मूत्रकृच्छ्र, मूत्र जलन, कड़क, पथरी, मुख कान्ति, शक्ति, मगज को तरी और नेत्रों की ज्योति बढ़ाता है।

इस प्रकार रत्न परीक्षा नामक ग्रन्थ और अन्य ग्रन्थों के पठन करने पर इन नव ग्रहों के नवरत्नों का वर्णन किया है, यदि इसमें कुछ त्रुटि या भूल रही हो तो पाठक वृन्द क्षमा करेंगे।

भावि विज्ञानस्य नवरत्न विधानमिदम्।

नवरत्न चौकी जड़वाने की रीति ।

पन्ना	हीरा	मोती
पुखराज	मानक	मूंगा
लहसुनिया	नीलम	गोमेदक

सब रत्न बे ऐब नहीं मिले तो एक मानक बे ऐब अवश्य लगावें ।

गुणी धरे बिन गुण नहीं देत ।
दोषी रत्न दोष हर लेत ॥

अंगूठी जड़वाने की रीति ।

अंगूठी उपरोक्त क्रम से ही जड़वानी चाहिये किन्तु अंगूठी के कौने गोल होने चाहिये ।

पूर्ण गुण चाहे तो सब रत्न बे ऐब लगावे ।

निर्दोषी मानक जहँ होइ ।
दोष न करही रत्न तहँ कोइ ॥

॥ समाप्त ॥